अप्रैल-मई-जून, 2023

ISSN2321-7677 Bhojpurisammelanpatrika

भाषा-साहित्य-संस्कृति-समाज आ विकास खातिर समर्पित

भोजपुरी

सम्मेलन पत्रिका

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका

वर्ष-33, अंक-04-06 पूर्णांक-395-397, अप्रैल-जून, 2023, सहयोग राशि-पचास रुपया

एह अंक के प्रायोजक

सुरेश कांटक, कांट, ब्रह्मपुर (बक्सर)

मोबाइल : 9931827620

प्रधान संपादक

डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

मोबाइल : 9430054236, 8210409370

•

संपादक

जितेन्द्र कुमार

मोबाइल : 9931171611

•

उप संपादक

दिलीप कुमार

मोबाइल : 7488489031

•

परामर्श मंडल

भगवती प्रसाद द्विवेदी

डॉ. नीरज सिंह

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

डॉ. सुनील कुमार पाठक

•

संपादकीय सम्पर्क एवं कार्यालय

डॉ. महामाया प्रसाद 'विनोद'

बी-12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, जगदेव पथ, पटना-800 014

मोबाइल : 9430054236, 8210409370

•

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे । लेखन, संपादन अवैतनिक ।

•

अ०भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के	'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि 150 रु० सालाना	वार्षिक ग्राहक सहयोग राशि 150 रु०
आजीवन सदस्यता सहयोग राशि 1000 रु०	सम्मेलन के सदस्य खातिर
आजीवन ग्राहक सहयोग राशि 1500 रु०	वार्षिक ग्राहक सहयोग राशि 100 रु०
विशिष्ट आजीवन सदस्यता सहयोग राशि 2000 रु०	प्रायोजक (एक अंक) 2500 रु०

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

संपादकीय

1. आहट सम्मेलन के स्वर्ण जयन्ती के
—डॉ. महामाया प्रसाद विनोद 4

जयंती पर

2. रूढ़िमुक्त भोजपुरिया समाज आ राहुल बाबा
—भगवती प्रसाद द्विवेदी 7

कविता

3. पचरी —जितेन्द्र सिंह 11
4. बदला जमाना
5. तितली —मनोकामना सिंह 13

कहानी

5. मनौती —आशा रानी 'लाल' 14

संस्मरण

6. महेन्दर मिसिर का बाद भोला भइया
—आनंद संधिदूत 17

पुस्तक समीक्षा

7. स्मृतिशेष पंडित गणेश चौबे भोजपुरी साहित्य के उन्नायक
—जितेन्द्र कुमार 22

नाटक

8. भोर के लाली उर्फ नयकी पतोह
—सुरेश कांटक 28

मजदूर दिवस पर

9. मजदूरन के जीवन–संघर्ष के खूब देखावल गइल बा हिंदी फिल्मन में —मनोज भावुक 48

प्रेरक प्रसंग

10 एगो असाधारण प्रतिभा के पूत —महामाया प्रसाद विनोद 51

***

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

आहट सम्मेलन के स्वर्ण जयंती के

भारत आपन आजादी के अमृत महोत्सव मनावल । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलनो के दुआर पर ओकर स्वर्णजयन्ती आहट दे रहल ह । 1973 में पाटलिपुत्र का पावन माटी पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन भइल रहे, बाकिर एकर पहिल अधिवेशन 8–9 मार्च, 1975 के प्रयाग राज में आयोजित भइल जेकर अध्यक्षता कइले रहनी प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक डॉ. उदय नारायण तिवारी जी, दोसरका अधिवेशन पटना के राजा राम मोहन राय सेमिनरी में 15–16 मई, 1976 में महान विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अध्यक्षता में आ तिसरका अधिवेशन भारत के पहिल राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का धरती पर सीवान में 29–30 अक्टूबर, 1977 में संपन्न भइल आ एकर अध्यक्षता कइले रहनी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. भगवत शरण उपाध्याय । एकरा बाद सम्मेलन के तेइस आउरी अधिवेशन खूब ताम–झाम से साहित्यिक–सांस्कृतिक माहौल में संपन्न होत रहल ह । आखिर में 26–27 फरवरी, 2022 के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सत्याग्रह के प्रयोग भूमि चम्पारण के मोतिहारी में 26वाँ अधिवेशन संपन्न भइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ समाज के बढ़न्ती खातिर लगातार लागल बा । सम्मेलन के एगो गौरवशाली इतिहास रहल बा । सम्मेलन हरेक अधिवेशन का अवसर पर स्मारिका प्रकाशित करे के संगे–संगे समय–समय पर भोजपुरी के पुस्तकन के प्रकाशनो करेला । सम्मेलन के क्रिया–कलाप में विभिन्न अवसर पर गोष्ठी आ सांस्कृतिक कार्यक्रमो के आयोजन होत आ रहल बा ।

एतने ना, पुरस्कार आ सम्मान योजना का क्रम में अबतक भोजपुरी के 139 साहित्यकारन, 38 कलाकारन आ 11 गो छात्र रचनाकारन के पुरस्कृत आ सम्मानित कइल जा चुकल बा ।

दुख के बात बा कि करोड़न भोजपुरी भाषा–भाषी लोगन के मातृभाषा आ एक से बढ़ के एक साहित्यकारन के कृतियन के भाषा भोजपुरी खातिर जेतना करे के चाहीं, हमनी का नइखी करत । जरूरत बा, सभे भोजपुरिया लोग क मिलके भोजपुरी के विकास में लगातार लागल सबसे पुरान संस्था अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन खातिर एगो स्थायी भवन आ कार्यालय के । हमरा इयाद बा रायपुर में जब 2009 में, सम्मेलन के 22वाँ अधिवेशन भइल रहे त हमरा संगे स्व. कृष्णानंद 'कृष्ण' आ डॉ. जीतेन्द्र वर्मा के एगो प्रतिनिधि मंडल तत्कालीन छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमण सिंह से मिलल रहे । उहाँ का सम्मेलन के बारे में सुन के आ सम्मेलन पत्रिका के प्रति देख के गद्–गद् भ गइनीं । अपना संगे फोटो खींचवइनीं आ प्रदेश में भोजपुरी के विकास में भरपूर योगदान, अकादमी के स्थापना के आश्वासन दिहनीं । आज छत्तीसगढ़ के रायपुर में सरकारी जमीन पर भोजपुरी भवन सज–धज के खड़ा बा ।

दुख एहू बात के ह कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जनम स्थली पटना में सम्मेलन के आपन एक बित्ता ना जमीन बा, ना आपन कोई भवन बा । अगर एह पुरान जीवन्त संस्था खातिर सभे भोजपुरिया भाई लोग, साहित्यकार, कलाकार लोग आपन–आपन कान्हा एह पुण्य काज में मन से लगा देवे त एकरा अपना जमीन पर खड़ा होखे में कवनो कठिनाई ना होखी।

एगो दोसर सवाल बा भोजपुरी भाषा के संवैधानिक मान्यता के । भोजपुरी जइसन अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के अबतक संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल ना भइल आश्चर्य के विषय ह । भोजपुरी जवन

www.bhojpurisahityangan.com

देश–विदेश में करोड़न लोगन के भाषा ह, ओकर नॉव संविधान के अष्टम अनुसूची में नइखे । मंच पर देश के अनेक महत्वपूर्ण पद पर आसीन राजनेता लोग, केन्द्रीय मंत्री चिदम्बरम तक संसद में एकरा मान्यता देवे के आश्वासन दे चुकल बाड़ें । अनेक सांसद लोग संसद में आवाज उठावल, विभिन्न संगठनन द्वारा धरना–प्रदर्शन के आयोजन भइल । एतने ना पटना में आयोजित पच्चीसवाँ अधिवेशन में मंच पर जोरदार शब्द में कुछ नेता लोग घोषणा कइल कि अगर हमार सरकार बनी त भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता जरूर प्रदान कइल जाई । सरकार ओही लोगन के बनल, फेर दोबारा ओही लोगन के नेतृत्व में केन्द्र में सरकार बनल, आजुओ ऊ सरकार सत्तासीन ह । बाकिर भोजपुरी भाषा जहवाँ के तहवाँ खड़ा घोषणा के वाट जोह रहल ह । अटल जी के सरकार बिहार के एगो भाषा के मान्यता दिहल । आशा बा, लोकप्रिय प्रधानमंत्री मोदी जी के सरकार भोजपुरी के अष्टम अनुसूची में टाँक के यश के भागी बनी ।

–महामाया प्रसाद विनोद

***

श्रद्धांजलि

आनंद संधिदूत

28 मई के भोजपुरी साहित्य के एगो जानल–मानल साहित्यकार कवि आनंद संधिदूत जी के निधन के समाचार मिलल । भोजपुरी में कविता, कहानी, निबंध, अनुवाद का संगे–संगे संपादन आदि इनकर अनेक कृतियन में प्रमुख ह –'एक कड़ी गीत के' सतमेझरा, कुरल कवितावली, अग्निसंभव । इनकर जन्म 27 अक्टूबर, 1949 के गहमर (गाजीपुर) में भइल रहे आ निधन 27 मई, 2023 के भइल ।

नन्दकिशोर मतवाला

एही बीच एगो आउर दुखद समाचार मिलल । साहेबगंज, करनौल मुजफ्फरपुर के अनेक नाटकन आ कविता आदि के रचनाकार नन्दकिशोर मतवाला जी के निधन के । मतवाला जी गाँव में रह के साहित्य, भाषा, नाटक, संस्कृति आदि से साहित्य, भाषा, नाटक, संस्कृति आदि । अनेक संस्था से सक्रिय रूप में जुड़ल रहनी । उनकर रचनन में प्रमुख बा– 'बिरहा सतावे दिन रात', 'अंगना भइल विरान', 'दिनमा भइल बदनाम', सेनुर बन गइल राख', 'भ्रष्टाचार जिन्दाबाद', 'पतझड़ के फूल', बड़कू भईया' आदि ।

अ.भा. भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से दूनो साहित्यकार लोगन के प्रति निवेदित बा श्रद्धासुमन ।

www.bhojpurisahityangan.com

जयंती पर

रूढ़िमुक्त भोजपुरिया समाज आ राहुल बाबा

भगवती प्रसाद द्विवेदी

ओइसे त पांडित्य आ विद्वता में सेसर, जन–जन का बीचे 'महापंडित' का रूप में प्रसिद्ध राहुल बाबा बौद्धधरम में दीक्षित होके 'साकृत्यायन' उपाधि अपना लेले रहनीं, बाकिर अपना महतारी भासा खातिर उहाँ के सरधा आ समरपन आउर भोजपुरियत के रंग में रंगाइल आचरन आजुओ प्रेरनास्रोत बनल बा । घुमक्कड़ी सुभाव वाला राहुल बाबा जहवाँ–जहवाँ गइल रहनीं, उहवाँ के भासा में महारत हासिल कऽ लेले रहनीं । अंगरेजीराज में अंगरेजी पर उहाँके दबदबा रहे । रूस में गइनीं त रूसी में विद्वता हो गइल । चीन आ तिब्बत में जाके चीनी आ तिब्बती प अधिकार कऽ लिहनीं । अपना देश में त संस्कृत, हिन्दी, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला, अरबी फारसी वगैरह ना जाने कतने बोली–भासा के उहाँके गम्हीर अध्येता रहनीं । बाकिर एह सभके बावजूद भोजपुरी आ भोजपुरियत में राहुल बाबा के जान–परान बसत रहे । एही कारन से जवना साल भारत के आजादी मिलल, ओही साल दिसंबर, 1947 में आयोजित **अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन** के दोसरका अधिवेशन में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के सभापतित्व के सम्मान दियाइल आ अपना अध्यक्षीय भासन में उहाँके ऐलान कइले रहनीं– "अबहिन हमनी के ई मतारी भाखा के केहू ना पूछत आछत बा, बाकिर कतेक दिनवा हो कतेक दिनवा ?

हमनी के देस के दिन लौटल । लोग सचेत भइल । ऊहो दिनवा आई जब हमनी के भाखा सरताज बनी ।"

आपन भाषा साहित्य–संस्कृति के स्तर पर सरताज त बनल, मगर सियासी लोग सचेत ना भइल, तबे नू आजुओ संविधान में आठवीं

www.bhojpurisahityangan.com

अनुसूची में शामिल होखे खातिर लमहर समय से संघर्ष जारी बा । राहुल जी कतना बडहन दूरद्रष्टा रहनीं, एकर अंदाज एही से लगावल जा सकेला कि अपना ओह ऐतिहासिक भासन में पंचायती राजबेवस्था लागू करे आ पढ़ाई के माध्यम मातृभाषा के बनावे प जोर देले रहनीं । ओह घरी ले भिखारी ठाकुर के लोग नचनिया बूझत रहे आ उन्हुका नाटकन के कीमत ना समुझल जात रहे । भासन में उहॉके भोजपुरिया दमखम के पर्याय बतवले रहनीं भिखारी ठाकुर के आ 'अनगढ़ हीरा' के खिताब देत कहले रहनीं– "हमनी क बोली में केतना जोर हवा, केतना तेज बा, ई अपने सब भिखारी ठाकुर के नाटक में देखीले ; लोग के काहें नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक ? काहें दस–दस पनरह–पनरह हजार के भीड़ होला इ नाटक देखे खातिर ? मालूम होत बा कि एही नाटक में पवलिक के रस आवेला । जवना चीज में रस आवे उहे कविताई । केहू के जो लमहर नाक होय आ ऊ खाली दोसे सूंघत फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय ! हम ई ना कहतानी जे भिखारी ठाकुर के नाटकन में दोस नइखे । दोस बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारन हवे पढ़ुवा लोग..... भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे । उनकरा में कुलि गुन बा, खाली एने ओने तनी तूनी छांटे के काम हवे ।"

उत्तरप्रदेश में आजमगढ़ जिला के पंदाहा गॉव में नौ अप्रैल, 1893 के जनमल राहुल जी बिहार में सारन जिला के परसा मठ में रहिके किसान आंदोलन आ आजादी के लड़ाई लड़त हाजीपुर, हजारीबाग जेहल के सजाइयो भोगनीं, बाकिर मठ होखे भा कारा–जहवॉ मोका मिलल, उहॉके भोजपुरी साहित्य रचल कबो ना भुलइनीं आ आजु ऊ रचना भोजपुरी साहित्य के अनमोल निधि बाड़ी स । उहॉके भोजपुरिया नेह–छोह के थाती चिट्ठिओ पतरी अखियान करे जोग बाड़ी स । जब आचार्य महेन्द्र शास्त्री के संपादन में भोजपुरी पत्रिका 'भोजपुरी' के प्रकाशन शुरू भइल, त भोजपुरी के महातम का बिसे में लिखल राहुल बाबा के चिट्ठी चरचा में रहल । आगा चलिके बाबू रघुवंश नारायण सिंह फेरू आरा से भोजपुरी पत्रिका 'भोजपुरी' के संपादन के सिरीगनेस कइले आ ओमें राहुलजी के 'भाखा महतारी' शीर्षक आलेख उहॉके मन–मिजाज, सोच के इजहार करत भोजपुरियत के रंग में रंगाइल रहे ।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन भोजपुरिया समाज के औरतन

www.bhojpurisahityangan.com

आउर किसानन के दारुण दशा देखिके मर्माहत रहनीं आ एकर खुलासा तब भइल, जब उहॉके सन् बयालिस के आंदोलन मे हजारीबाग जेहल में बंद रहनीं । जेहले में रहिके उहॉके एगो इतिहास रचेवाला नाटक लिखि दिहनीं, जवन 'मेहरारुन के दुरदसा' नॉव से मशहूर भइल आ आजुओ ओकर प्रासंगिकता जस के तस बरकरार बा । आजु समाज में आ रहल बदलाव आ नारीवादी आंदोलन के पैरोकारी के बावजूद भोजपुरी समाज के पुरुष प्रधान रवैया कवनो खास परिवर्तन नजर नइखे आवत । इहे कारन बा कि आजुओ राहुल बाबा के 'मेहरारुन के दुरदसा' के जहवॉ मंचन होला, देखनिहारन के ऑखि डबडबा आवेले आ नाटक के कथ गहिर संवेदना जगावे बेगर ना रहे । नाटक में जगहा–जगहा अइसन गीत गूथल गइल बाड़न स, जवन देखे–पढ़ेवालन के मंथन करे खातिर मजबूर कऽ देलन स । लरिका–लरिकी में भेद करेवाला समाज के ऑखि खोलेवाला गीत के पांती देखीं–

एके माई–बपवा से एकही उदरवा से
दूनों के जनमवा भइल रे पुरुखवा !
पूत के जनमवा में नाच आ सोहर होला
बेटी के जनम परे सोग रे पुरुखवा !

धनवा धरतिया प बेटवे के हक होला
बेटिया के किछऊ ना हक रे पुरुखवा !
मरदा के खइला कमइला के रहता बा
तिरिया के लागेला केवाड रे पुरुखवा !

अइसहीं, करजा–रिन लेके खेती करे आ आपन सरबस गँवा देबेवाला किसान के फटेहाली नाटक में आइल एगो गीत में झलकत बा, जवना के भयावहता करेजा कंपा देला–

रे फिकिरिया मरलस जान !
सॉझ–बिहान के खरची नइखे, मेहरी मारे तान
अन्न बिना लरिका रोवेला, का करीं हे भगवान !
रे फिकिरिया मरलस जान !
करजा काढ़िके खेती कइलीं, खेतवे सूखल धान
बैल बेंचि जिमदरवा के दिहलीं, सहुआ कहे बेइमान ।
रे फिकिरिया मरलस जान !

राहुल बाबा जब हाजीपुर जेहलखाना में कैद कऽके राखल

www.bhojpurisahityangan.com

रहनीं, त उहॉके दूगो अउरी मशहूर नाटक– 'नयकी दुनिया' आ 'जोंक' के सिरिजना कइनीं । 'नयकी दुनिया' में पुरनकी रूढ़ि आ जाति–बिरादरी के बन्हन तूरिके नवकी दुनिया बनावेके आवाहन कइल गइल रहे । खून चूसेवाला जोंक के प्रतीक बनाके समाज में बेयापल शोसन–दोहन के खिलाफ प्रतिरोध के सुर बुलंद करेवाला नाटक रहे 'जोंक', जवना के चार अंक में दौलतमंद सेठ महाजन का संगे साधुओ के नॉव प ठगी करेवाला बटमारन के चित्र उकेरल गइल रहे ।

'दुनमुन नेता' राहुल बाबा के एगो आउर सब तरह से प्रासंगिक नाटक बा, जवन ओइसन सियासी नेतवन के खबर लेता जे निजी सवारथ लालच वश पार्टी बदलत बा आ बेगर पेनी के लोटा नियर दुनमुनात रहत बा ।

दोसरका विश्वयुद्ध का समय रचाइल राहुलजी के चार गो अउरी भोजपुरी नाटक रहलन स, जवन तत्कालीन दुनियावी हालात के तस्वीर खींचत उहॉके सोच के गम्हीर उद्घाटन करत रहलन स । ऊ नाटक रहलन स– 'ज़पनिया राछछ', 'जरमनवा के हार निहचय', 'ई हमार लड़ाई ह', 'देस रछक' । ई नाटक एहू तथ के उजागर करत बाड़न स कि उहॉं के निगाह खाली अपने देश पर ना, बलुक सउँसे दुनिया के बदलाव पर रहे आ भोजपुरिया समाज के एह बाबत आगाह कइल उहॉं के एह नाटकन के रचेके मकसद रहे । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन उहॉके मए भोजपुरी नाटकन के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में छापिके पुस्तकाकारो प्रकाशन कइले रहे ।

सामाजिक तमाम विषय उहॉके रचनाशीलता के जद में रहे आ ओह सबके जरी–सोरी खातमा कऽके एगो सेहतमंद भोजपुरिया समाज के निरमान आदर्श लक्ष्य रहे ।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के मूलभूत सवाल आजुओ बरकरार बा । जब ले रूढ़िमुक्त समाज के निरमान ना होई, जब ले अबला संपूर्णतः सबला ना बनि जइहें आ जब ले भोजपुरी के आपन हक हासिल ना हो जाई, तब ले राहुल बाबा के सपना अधूरे रही आ जन–मन के कराह ओइसहीं गूँजत रही–रे फिकिरिया मरलस जान....!

–शकुन्तला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर,
पटना–800001 (बिहार), चलभाष : 930469303

***

www.bhojpurisahityangan.com

पचरी

—जितेन्द्र सिंह

पाय लागीं ए मालिक
काहे भकुआइल बानी
ना चिन्हलीं का ?
हँ त अब काहे के चिन्हब
असहीं नइखे नू कहल मसल में
कि काम भइल दुख बिसरल
अबहीं हालही में नू राउर
दुआरी में लागत रहे चउकठ
आ उ ना आवत रहे साहुल सुता में
त हमरे के नू ठोकले रहे
राउर मिसतीरी काट छांट के
हम उहे पचरी नू हईं
कइसे भुला गइलीं रउआ
जब बीने के रहे खटिया आ
लगावे लगलीं पौआ में पटिया

www.bhojpurisahityangan.com

होखे लागल ढीला त
हमरे के नू ठोक के पौआ के छेदा में
टैट कइली त बिनाइल राउर खटिया
हम उहे पचरी नू हईं
पिछिलिके आसाढ़ में नू
रउआ किन के लेआइल रहीं
नाया कुदारी बाजार से
आ लगावे लगलीं ओह में बेंट
त होखे लागल ढीला
फेरू हमहीं ठोकइलीं
कुदारी आ बेंट के बीचे
तब जाके जमकल बेंट
हम उहे पचरी नू हईं
आउर केतना गिनाई कि हम
कहाँ–कहाँ ठुसाइला–ठोकाइला
बाकी लउकीला ना
अन्ह भइल रहिला हरमेसा
आ बनल रहिला भुलावे के चीज

–ग्राम– बड़की खड़ावं, पोस्ट– बड़की खड़ावं, जिला– भोजपुर, बिहार

***

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सशक्त बनावे खातिर सम्मेलन के विशिष्ट आजीवन सदस्य भा वार्षिक सदस्य बनीं आ आपन मातृभाषा के प्रति श्रद्धा प्रकट करीं ।

–संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

बदलत जमाना

—मनोकामना सिंह

एक

बाबा लोगन का जमाना में
न बँटाइल रहे चूल्हा—चउका
बाबू जी आ चाचा जी के जमाना में
बँटा गइल चूल्हा—चउका
हमनी का जामना में बँटा गइल
खेत—खलिहान—अँगना
अब हमनी के संतान
बॉट रहल बाड़े
आपन माई—बाबू के
जे संगे मिलके उनका के
बड़ा कइलस पढ़ा—लिखा के
कमाए जोग बनवलस
आपस में बॉट ले रहल बा
ऊ लोग के साथ—साथ रहे के
जबकि जरूरी बा एह समय में
दुख—सुख बतियावे के
माई—बाबू के पाले
मोबाइल त बा
बाकिर ई लोग ठमक से
सुन नइखे सकत
स्क्रीन पर देखेला
खाली एक—दोसरा के
अपना भाग के कोसेला ।

***

तितली

दो

अचके में एगो तितली
उड़ के हमरा कमरा में आइल
हम पूछलीं ओकरा से
इहाँ फूल त नइखे
इहाँ काहे आइल बाड़ऽ
तितली बोलली
इहाँ फूल नइखे
इहाँ फूल नइखे
इहाँ कूल त बा
बाकिर बहरी से जादा ।

—जमशेदपुर, झारखण्ड

***

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

मनौती

—आशारानी 'लाल'

घर काम से छुटकारा पावे आ नहा—धोके आराम से आज घाम में आके बइठले रहीं कि 'नन्ही' दीदी के फोन आइल ।

हाल—चाल पूछला के बादे कहली कि कई बेर हम तोहरा के फोन लगवनी, बाकी का जाने तूँ केने रहू कि उठइबे ना कइलू ।

—दीदी, अइसन बात मत कह । अरे हम फोनवा केनियो रख देले होखब । अब फोनवो पर बोले बतियावे के मन नइखे करत, एही से सुन ना पवले होइब । आज तऽ ई फोनवा हम हाथे में लेले रहीं, तबे न झट से उठा लेलीं हऽ ।

— ए दीदी ! अब हमरो उमीर पचास से उपरे के हो गइल बा । तूँ तऽ जानते बाड़ू कि छव बहिन में हमहीं सबसे बड़ रहीं । फेरू एह जिनगी में हमरा पर अइसन कलंक क टीका लाग गइल कि हम आजो अकेलहीं रह गइलीं । माई कहाए के नउबते ना आइल, नऽ अब आई । ई अकेलापन अब बहुत खटकता ।

—रानी— तूँ तऽ माई ना बनला से अकेल बाड़ू । तनी हमरा ओरी

www.bhojpurisahityangan.com

ताकऽ नऽ । तोहार जीजा अचक्के में हमके छोड़ के एह दुनिया से चल गइलन । हम पॉच बचवन के माई बनियो के एह बुढ़ापा में अकेले रहे के सराप अब भोग रहल बानी । बइठल–बइठल माछी मारत रहतानी । अब कुछ सोच नइखीं पावत । ठीक से अगर नजर घुमावतऽ हमनी के दुनू बहिन के गति एके बा ।

–जानतारू रानी एह घड़ी पुरनकिए बतिया, भले ऊ लइकइएँ के काहे न होखे, चाहे जवानी के होखो । –ओही क इयाद साथ देत रहता । ओही इयाद में कुछ छन बीत जाता । –ए रानी ! आज बड़ा मन करता कि एक बेर अपना लरिकाई के घरे, यानी अपना नइहर हम जइतीं । अपना मनवा के ई बात हम केकरा से कहीं । आज तूँ इयाद परलू ह तब सोचली हँ कि तोहरे से बतियाइब ।

–अरे ! दीदिया ! तूँ तऽ लागता कि हमरा मुँहवा के बतिए छीन लेले बाड़े । हमरो मन तऽ ओही घर के डीह देखे खातिर बेचैन बा । तूँ तऽ जानते बाड़ू कि हम छव बहिन रहीं । ओहू में सबसे बड़ हमहीं रहीं । जब हमरा बियाह के समय आइल तब पापा बहुते बेचैन रहे लगलन । ऊ अपन नोकरी कइला के बाद मोटर साइकिल उठा के हमरा खातिर लड़िका खोजे निकल जात रहन । हरदम सोच–विचार में परल रहत रहन । कहस कि एगो में त खोजत–खोजत ई जूता टूट गइल । तब हे भगवान, एह छवगो में का होई ।

जान तारू दीदी, एक दिन पापा के दशा देख के हमरा मन में एगो बात आइल । हम कहलीं कि हे गॉव के देवी माई ! हमरा पापा के एगो लड़िका खोजवा दीं । फेरू हम राउर दर्शन करे जरूर आइब ।

दीदी ! पापा के लड़िका मिल गइल । हमार बियाहो हो गइल, बाकी आज ले हम देवी दर्शन के मनौती ना पूरा कर पवलीं ।

हमार बियाह सब तरह से सम्पन्न आ धनी–मनी घर में भइल । उहाँ खेती–बारी, बंगला–गाड़ी आ फोन सबके सुख रहे । हम हरदम एह सुख से अघाइल रहत रहीं, बाकी माई बनला के सुख हमके आज ले ना भेंटाइल । हमके लेके हमार दुलहा कईगो अस्पताल आ डॉक्टर के चक्कर लगवन । सब बड़का बड़का मंदिर ओ देवी–देवता के चउकठ पर जाके हमनी के मुड़ी पटकलीं । कुल कइलो पर केहू हमरा ओरी न ताकल, न हमार बात सुनल । हमार ससुरा धनवान रहे तब ऊ गॉव के ओरी तकलो ना चाहत रहे । हमरा गॉव के तऽ सब लोग भदेस चाहे

www.bhojpurisahityangan.com

बकलोल गॉव कहे । उहॉ जाए से ऊ लोग के इज्जत पर बट्टा लाग जाइत, एह से हमरो के लोग ना जाए देत रहे ।

अब जब हम एह उमिर में आके एइजा बइठल बानी, तब हमरा इयाद परल हऽ कि एह ससुरा के सुख हमके भरमा देलस । हम अपना गॉव के नइहर न जा पवली, न देवी माई के दर्शन कर पवली । आपन मनौती हम आज ले ना पुरवलीं । उहॉ जाके आ अपना नइहर के देवी–माई सेहम अगर अपना मन के दुःख कहले रहतीं, तब हो सकत रहे कि जइसे हमरा पापा के ऊ हमरा खातिर एगो लड़िका खोजवा दिहली, ओसहीं हमरो के ऊ माई जरूर बना देती । नइहरे के लोग नऽ बेटी के गम के बात सुनेला आ जानेला । नइहर कबो अपना बेटी के रोवत आ डहकत ना देख सकेला । ए दीदिया हमरा मन के बात मने में रह गइल, एहसे कि एगो धनवान ससुरा के पतोह बन गइल रहीं । हमरा गॉव के लोग भदेस कहत रहे । ओह गॉव में जाए से ससुरा के इज्जत पर बट्टा लाग जाइत । हम का हीं । ससुरा के सुख हमरो के आन्हर बना देले रहे । ओह लोग के धन–दउलत के अहंकार में गॉव लउकते ना रहे । हमरा बुझा गइल कि हम अपना गॉव के देवी माई से कइल वादा पूरा ना क पवलीं, ओही क सजा आज भोगतानी ।

ए– नन्ही दीदी ! आज जब तोहार फोन आइल हऽ तब लागता कि हमार नींन टूटल हऽ । दिमागो काम करे लागल ह । अपन लइकाई के वादा इयाद पर गइल ह । सोचतानी कि जब दीदिया नइहर के गॉवे जइहन तब हमहूँ जरूर जाइब । तोहरा संगे गॉवे जाके हम लागता कि गंगा नहा लेहब ।

हम अपना देवी से वादा कइले बानी, ऊ तऽ पूरा करिए लेइब । हमार माई एक बेर बतवले रहे कि कनो भाखल वादा जरूर पूरा करे के चाहीं । अब देवी के जवन बुझाई, ऊ करिहन ।

नन्ही ई बात सुनते कहली कि 'ए रानी' हमरा बुझाता कि गॉव के देवी हमनी के एह उमिर में अब बोलवले बाड़ी । जरूर ऊ कुछ हमनी खातिर सोचिहन । ए– रानी बहिना ! तूँ तइयारी कइलऽ । हम परसों तोहके लेवे आइब ।

जी–2/207, गंगा ब्लॉक–2, गंगा अपार्टमेंट, सेक्टर डीपीटी–6,
बसंत कुंज, दिल्ली, मो0 : 9968438886

***

www.bhojpurisahityangan.com

महेन्दर मिसिर का बाद भोला भइया

—आनंद संधिदूत

भोलानाथ गहमरी के जन्म सन् 1923 में वर्मा (म्यामार) के एगो रियासत में भइल रहे । एह रियासत या इस्टेट (Estate) के किस्सा बड़ा रोचक बा । रियासत के मालिक हरी जी (हरि प्रसाद सिंह) रहलन । हरी जी के पिता राय जय प्रकाश लाल सी0आई0ई0 डुमरांव रियासत के दीवान रहलन । ई बड़ा चर्चित आ प्रभावशाली प्रशासक रहलन । इनका बाद इनकर पुत्र हरी जी भी कुछ दिन डुमरॉव महाराजके दीवान रहलन । इनका कार्यकाल में वर्मा वाली जागीर के कुछ अइसन तकनीकी पेंच फँसल कि ऊ डुमरांव महाराज आ हरी जी में बड़ा चर्चित मुकदमेबाजी भइल । डुमरांव का ओर से मोती लाल नेहरू वकील रहलन आ हरी जी का ओर से सी0आर0 दास बैरिस्टर आ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वकील रहलन । ई मुकदमा लन्दन प्रीवी कौंसिल तक गइल । ओहिजा हरी जी जीत गइलन । राजेन्द्र प्रसाद का आत्मकथा में एकर विस्तार से जिक्र बा । एह मुकदमा के चर्चा आरा, गाजीपुर, बलिया वगैरह में हमनी का लइकाई में खूब होखे । हरी जी का बंशज लोग का पास ई जागीर बर्मा का आजाद होखे तक रहल । जागीर का मुआवजा में भारी रकम एह परिवार के मिलल जेसे ई लोग सीमेन्ट, होटल, रंग—पेन्ट वगैरह के बिजनेस कइल । एही परिवार का सेवा में गहमर के कुछ कायस्थ परिवार पहिले वर्मा में आ बाद में बिहार में रहल । भोलानाथ गहमरी के पिता रामचन्द्र लाल ओही में से एगो रहलन । ऊ बर्मा में हरी जी का

www.bhojpurisahityangan.com

जागीर में जज रहलन ।

जब जापान का सहयोग से सुभाष चन्द्र बोस के सेना बर्मा के फुँकलसि त भोलानाथ गहमरी का सामने विकट समस्या खड़ा हो गइलि । ऊ अपना महतारी का साथ गहमर रहलन आ पिता बर्मा में लापता रहलन । बीस–बाइस साल का गहमरी का सामने घर–खर्चा का साथ–साथ पिता का जीवन–जोह के चिन्ता भी रहे । ऊ पागल नियर बदहवास कपार छिला के घूमत रहलन । अइसन हमार माई बतावे ।

बर्मा में यू.पी., बिहार के बहुत लोग फँसल रहे । ए लोग का सामने हर तरह के अभाव रहे । पास में बर्मा के करेन्सी नोट रहबो कइल त कवनो बनिया लेबे के तइयार ना रहे । भोजन–दवा का अभाव में लोग मरे लागल । अइसन भी सुने में आइल कि भूख का मारे माई–बाप आपन जियते लइका भूँज के खा गइल । आवे के रास्ता आसाम का बेंत का जंगल से नदी–पहाड़ लाँघत बिहार का ओर आवे के रहे । एह भागत–दउड़त भीड़ में गहमरी के पिता रामचन्दरो लाल एक बोरी बर्मा का करेन्सी नोट का साथ चलत रहलन । रुपिया सहित ऊ घरे पहुँच त गइलन, बाकिर ढो के ले आइल धन कामे ना आइल । करेन्सी नोट लइका खेल गइलन स भा सादी–बियाह में माँड़ो सजावे के काम आइल ।

एह विषम परिस्थिति में भोला भइया के शिक्षा कवनो तरह इन्टर तक भइल । माली हालत सुधारे खातिर ऊ नौकरी खोजत इलाहाबाद (अब प्रयाग) आ गइलन । उनके पहिले ग्लास फैक्टरी में, फेर इलाहाबाद बिजली सप्लाई कम्पनी में काम मिलल । एह काम के ऊ रिटायर होखे तक सफलतापूर्वक कइलन । साइड बिजनेस में होमियोपैथिक दवा के भी धन्धा रहे । उनका इहाँ कई असाध्य रोग के लोकप्रिय दवा रहे । भोजपुरी कविता–कथा के प्रयोगवादी साहित्यकार प्रो. उमाकान्त वर्मा के हम मोटापा के दवा लेत देखले बानी, पता ना फायदा भइल कि ना ।

इलाहाबाद में ऊ सन् 1980 तक रहलन । ओहिजा उनकर मुख्य मारकेट हिवेट रोड पर निजी मकान रहे । इलाहाबाद का साहित्यिक–सांस्कृतिक जगत में उनकर दखल रहे । ऊ 'अमरावती' आ 'नया शिल्प' दूगो पत्रिका निकललन । पत्रिका जोरो पकड़ली स, बाकिर आगे पूँजी ना लगा पवले । प्रयास विफल भइल । ऊ इलाहाबाद, वाराणसी, गहमर में कई गो ऐतिहासिक भोजपुरी समारोह, कवि सम्मेलन

www.bhojpurisahityangan.com

आ नाटक के आयोजन कइलन । उनकर भोजपुरी में तीन गो गीत संग्रह– 'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' आ 'लोक रागिनी' आ हिन्दी में दूगो नाटक– 'लोहे की दीवार' और 'मुट्ठी भर देवता' छपल । एकरा अलावे केतने संकलन में सह लेखक/ कवि रहलन । इनका किताबन के अग्रसारण हजारी प्रसाद द्विवेदी, फिराक गोरखपुरी, विवेकी राय कइलन । इलाहेबाद में गहमरी आ मोहम्मद खलील के जोड़ी बनलि । एह जोड़ी का तत्वावधान में भोजपुरी गीत आ संगीत में सांस्कृतिक क्रान्ति हो गइल । एह संगीत का नयापन के अनुसरण आज तक लउकत बा । उनका इलाहाबाद का आवास पर सैकड़न साहित्यकारन, गायक आ फिल्मी कलाकारन के मजमा लागे । इनही का प्रयास से अ0 भा0 भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रांगण में भइल ।

इनकर इलाहाबाद में बजट बहुत भारी रहे । रिटायरमेन्ट का बाद एतना बड़ा खर्चा इलाहाबाद में रहि के बरदास कइल सम्भव ना रहे । एह से ऊ शेष जिन्दगी गाजीपुर शहर में बितवलन । एहिजो भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगो अधिवेशन भइल । गाजियोपुर में केतने कवि–गायक–गायिका आपन कला उनकर सान्निध्य में निखारल । भोलानाथ गहमरी के लम्बाई नेपोलियन बोनापार्ट आ लाल बहादुर शास्त्री नियर बड़ कम रहे, बाकिर अद्भुत संगठन क्षमता रहे । ऊ बड़े–बड़े राजनेता, अफसर, व्यवसायी से सम्पर्क स्थापित कइ के मनचाहा आर्थिक सहयोग ले लेत रहलन । ऊ आपन किताब कई–कई हजार छपावस आ सहज ढंग से बेच लेसु । महेन्दर मिसिर का बाद भोलानाथ गहमरी ही एह लोकप्रियता के पवलन ।

समय का साथ इनकर प्रासंगिकता बढ़ल बा। इनकर साहित्य देश के सीमा लांघ के विदेश तक पहुँचल बा। इनकर लिखल के अनुवाद होत बा। कई विश्वविद्यालयन में पढ़ावल जात बाड़न । गाजीपुर शहर में इनका नाम पर सड़क के नामकरण भइल बा। इनके केतने विद्वान कवि गायक रंगकर्मी आपन गुरू मानेलन ।

इनकर भोजन सात्विक रहे । ई अल्पभोजी रहलन । बाकिर बीड़ी–सिगरेट के आदति रहे । शादी–विवाह आ काव्य समारोह में ई नशीला शर्बत भी लेत रहलन । ताश खेले के बड़ा शौक रहे । श्रीधर शास्त्री आ ओम प्रकाश केला का साथ इनकर खूब कोट–पीस आ

www.bhojpurisahityangan.com

ट्वेन्टी–नाइन होखे । इनकर देहान्त सन् 2000 दिसम्बर (6) के कैंसर से भइल ।

भोला भइया हमार चचेरा भाई रहलन । गहमर में अठारह–बीस कायस्थ परिवार एक ही आदमी (वीरनाथ ठाकुर) से विस्तार पाके एतना बड़ भइल रहे । हमरा आ उनका में पॉच–छव पीढ़ी के अन्तर रहे । हमार पिता परसीधन लाल (प्रसिद्ध नारायण वर्मा) भी लिखत आ फाड़ के फेंकत रहलन । चाचा–भतीजा (भोला भइया) में रचना के आदान–प्रदान होखे । बाकिर हमरा बाबूजी के हमार लिखल तनिको ना सोहात रहे । लिखल देख लेसु त बिगड़ जासु । सोग से जब भोला भइया के पता चलल त ऊ संरक्षण देवे लगलन । ऊ हमके बोला के सुनस, सलाह देसु, पसन्द आवे त रचना टेप करस । भोजपुरी में लिखे के प्रेरणा हमके सन् 1961–62 का आसपास 'आज' दैनिक में छपे वाली रचनन के पढ़ के मिलल । ई भोला भइया के सम्पर्क में आके 'निष्ठा' में बदल गइल । हालॉकि हम मंच का लायक ना निकललीं, बाकिर भोला भइया जबतक जियलन, हमके कवि सम्मेलन में जरूर बोलवलन आ मार्ग व्यय जरूर दिहलन । उनका माध्यम से केतने कवियन, गायक–गायिका से सम्पर्को–परिचय भइल ।

इनसे हमके डॉट आ प्रशंसा दूनो मिलल । गहमर से देहाती दुलहा नियर पियरी धोती पहिन के जब हम इकोनामिक्स का लेक्चरर से बिआह करे इलाहाबाद पहुँचनीं त दॉत पीस के भोला भइया कहलन कि अउर कुछ पहिने के नाहीं रहल ह । प्रशंसा त हर बेहतरीन कविता पर मिलल । अन्तिम प्रशंसा जब पढ़लन कि–

अनकर पीठ से छिपवले बानी छतिया
टुटहा बटाम लेखा कोट के इजतिया...

त अपना के रोक ना पवल । आ लिखलन– पोस्टकार्ड पर कि आशीर्वाद, खूब लिखो । साथ ही सावधान भी कइलन कि देखिहे– भोजपुरी रचनाधर्मिता का अभाव में कुण्ठा का ओर जा तिया । पांडेय कपिल भी मुँह से त ना कहलन, बाकिर फोन पर उनकर दैहिक भाषा अइसने कुछ बतावत मिललि । भोला भइया हम मिर्जापुर अइनीं, तब से लेके मृत्यु शय्या पर जाये तक बराबर अइलन ।

भोला भइया प्रेम आ सौन्दर्य का शब्दन से प्रभु के भक्ति कइलन । विश्व का साहित्य में अइसना भक्ति के जवन परम्परा रहे,

www.bhojpurisahityangan.com

ओमे चार–चॉद लगवलन । उदाहरण में अंग्रेजी के कवि जान डोन (John Donn) fy[kyu fd God is my hunsand and I am his beloved wife. एकरा चालिस पचास साल बाद कबीर लिखलन कि 'हरि मोर पिउ, हम राम के दुलहिया !' काहेंकि महेन्दर मिसिर के कवनो रचना हमरा पास नइखे, एह से एह महान गीतकार के सादर प्रणाम करत बानी । आ इनका बाद बीसवीं सदी में भोलानाथ गहमरी एके अउर निखारत लिखलन कि–

पिया पुरइनिया के पात
नयन मोर निरमल तलइया !

हम निधन से एक दिन पहिले इनकर अन्तिम दर्शन कइनीं । धोती–बाछी के तइयारी होत रहे । उहे छवि ध्यान में धरत सम्मोहन भरल एह दिव्य पुरुष के प्रणाम ।

***

निहोरा

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सदस्य बनके सम्मेलन से जुड़ीं । सम्मेलन पत्रिका में सहयोग करीं आ सम्मेलन पत्रिका पढ़ी ।

सहयोग–राशि

सदस्यता वार्षिक	:	150.00 रुपया
आजीवन सदस्यता	:	1000.00 रुपया
विशिष्ट आजीवन सदस्यता	:	2000.00 रुपया
पत्रिका वार्षिक	:	150.00 रुपया
पत्रिका आजीवन	:	1500.00 रुपया
पत्रिका के प्रायोजक	:	2500.00 रुपया (एक अंक खातिर)

पत्रिका के दस गो वार्षिक सदस्य बनावे खातिर 150x10=1500 रुपया सहयोग करीं आ ग्यारह प्रति पत्रिका रजिस्ट्री से रउआ पास साल भर भेजल जाई । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के खाता संख्या 441010100001373 IFSC BKD0004410 बैंक ऑफ इन्डिया, बीरचन्द पटेल पथ पटना-800001 (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक समीक्षा

स्मृतिशेष पंडित गणेश चौबे भोजपुरी साहित्य के उन्नायक

–जितेन्द्र कुमार

हर्फ पब्लिकेशन नई दिल्ली–58 से ग्रंथ छपल बा डॉ. बिक्रम कुमार सिंह के पुस्तक 'भोजपुरी के विश्वकोश' पंडित गणेश चौबे'। लोक–साहित्य (भोजपुरी विषयक) अध्ययन, अनुसंधान, संग्रह, संपादक, समीक्षा में स्मृति शेष पंडित गणेश चौबे के अवदान पर केन्द्रित बा । भोजपुरी लोक–संस्कृति के भारतीय लोक संस्कृति के अस्तित्व के अभिन्न अंग बा । पंडित गणेश चौबे जी लोक–साहित्य आ संस्कृति के अध्ययन के दिशाईं जार्ज ग्रिहर्सन, डॉ. बैरियर एलवीन, बिलियम आर्चर, डॉ. फैलन राय बहादुर सरच्चन्द्र राय आ लाल बिहारी दे के कृतित्व से प्रेरित आ अनुप्रामाणित रहीं । ई बहुत बड़ सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक विडंबना बा । लोक–साहित्य आ लोक–समाज खातिर कि फुलस्केप कागज के लगभग सात हजार पृष्ठन में लोक–गीत, लोक–कथा, बुझअवल, कहावत एवं रीतिरिवाज लोक विश्वास आदि विषयक समाग्रीयन के संग्रह कइलन, जेकर हिंदी, अंग्रेजी आ भोजपुरी में 242 निबंध प्रकाशित बा, जे भोजपुरी लोक में प्रचलित 22 हजार शब्दन के हिन्दी अर्थ बतावत व्याकरणिक कोटि बतावत, ओकर ब्युतपति बतावत भोजपुरी शब्द कोश के निर्माण

www.bhojpurisahityangan.com

कइलन, ओकर ना कवनो पुस्तक प्रकाशित बा ना रचनावली । ना ग्रंथावली प्रकाशित बा । लोक साहित्य में ऊहाँ के अवदान खातिर, 'इन्डियन फॉकलोर कांग्रेस' (1989) में 'मूर्ति देवी पुरस्कार' से सम्मानित कईल गइल रहे । ऊहाँ के लेखन 1941 ई. से लेके 1997 ई. तक देश–विदेश के पत्र–पत्रिकण में छपल छितराइल बा । जवनन के खोजल मुश्किल बा । निश्चित रूप से पंडित गणेश चौबे के व्यक्तित्व आ कृतित्व आकर्षक आ प्रेरक बा । अइसन व्यक्तित्व के बारे में जाने समझे के सहज जिज्ञासा होला ।

भोजपुरी भाषा भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल नइखें उ रोजी–रोटी के भाषा नइखें बन पावल, तबों भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे से प्रेरित युवा लेखक डॉ. बिक्रम कुमार सिंह निर्णय लेहलन कि उनका भोजपुरी साहित्य में एम.ए. करे के बा । भोजपुरी उनका अवसही निक लागेली जैसे उनका माई निक लागेली । पी.–एच.डी. करे का सिलसिला में बिक्रम कुमार सिंह भोजपुरी विभागाध्यक्ष डॉ. जयकांत सिंह 'जय' (बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर) से मिलले त ऊहाँ के कहनी कि तू पंडित गणेश चौबे जी पर शोध कर । ऊहाँ के मार्गदर्शन कइली कि तू डॉ. ब्रजभूषन मिश्र जी से ऐह नेवरतक सामाग्री आ मार्गदर्शन प्राप्त कर । शोध–प्रबंध के विषय तय हो गइलः "लोक साहित्य विषयक अध्ययन, अनुसंधान, संग्रह आ संपादन के कार्य में पंडित गणेश चौबे के योगदान ।"

विवेच्य पुस्तक के अध्ययन से पता चलत बा कि गणेश चौबे जी में समग्र लोक साहित्य आ लोक संस्कृति के प्रति आश्चर्यजनक उत्साह, लगाव, जुड़ाव, त्याग–तपस्या समर्पण के भाव रहे । डॉ. बिक्रम कुमार सिंह उल्लेख्य पुस्तक में पंडित गणेश चौबे के व्यक्तित्व–कृतित्व के सात अध्याय में प्रस्तुत कइले बाड़न ।

स्वाभाविक रूप से शोध–प्रबंध के जवन पैटर्न बा विश्वविद्यालय में तदनुसार पहिलका अध्याय में विषय प्रवेश आ अध्ययन के आधार प्रस्तुत बा तथा सातवाँ अध्याय में 'उपसंहार' बा ।

दूसरका अध्याय में गणेश चौबे जी के जीवन–वृत्त, शिक्षा, पेशा, स्वाध्याय, संग्रह, संस्थागत–संबंध आ व्यक्ति–संबंधन के रोचक आ विस्तृत वर्णन बा । पं. गणेश चौबे के जनम 5 दिसंबर, 1942 ई. के ग्राम–सॉढ़ा डम्मर, जिला–मुजफ्फरपुर (बिहार) में भइल रहे । सॉढ़ा

www.bhojpurisahityangan.com

डम्मर ऊहाँ के ननिहर रहे । ऊहाँ के पैतृक गाँव पूर्वी चम्पारण के बंगरी गाँव ह । उहाँ के मोतिहारी जिला स्कूल के छात्र रही, जहाँ से 1932 ई. में मैट्रिक पास कइलीं । उनुकर जनम सम्पन्न किसान परिवार में भइल रहे, बाकी ऊहाँ के महाविद्यालय शिक्षा का ओर अग्रसर ना होके, टाइपिंग आ शॉर्टहैंड के प्रशिक्षण लिहली, जवना के आधार पर 1934 ई. में मोतिहारी समाहरणालय में लिपिक के पद पर नियुक्त भइलीं । सन् 1934 से 1948 ई. तक चौबे जी मोतिहारी कलक्टरी में सेवा दिहलीं । पिता जी के असामयिक मृत्यु के कारण ऊहाँ के समाहरणालय के सेवा छोड़ि के गाँव में खेती किसानी के निगरानी में लाग गइलीं । उल्लेखनीय ई बा कि समाहरणालय के एकरस–एकरंग जिनिगी से चौबे जी स्वाध्याय आ संग्रह, भोजपुरी भाषा–लोक साहित्य आ संस्कृति के प्रति कइसे मुड़ गइलीं । जिंदगी के कवनो एगो सामान्य घटना भा संवाद प्रतिभावना आ संवेदनशील मनई के जीवन–दिशा बदल देला । लेखक डॉ. बिक्रम कुमार सिंह एक अध्याय में जिक्र करत बाड़न कि पाँचवाँ क्लास में पढ़े के दरमियान एगो मैथिली ब्राह्मण छात्र–साथी एगो प्रश्न कइलख "चौबे जी मेरी मातृभाषा मैथिली है, तुम्हारी मातृभाषा का क्या नाम है ?" चौबे जी ने जब अपनी मातृभाषा हिंदी बताई त अगला प्रश्न रहे : "क्या तुम घर में वैसा ही बोलते हो ?" चौबे जी निरूत्तर रहलीं । बाद में ऊहाँ के 'सुधा' में प्रकाशित दिवंगत रास बिहारी राय शर्मा का 'भोजपुरी' शीर्षक लेख पढ़ली त ऊहाँ के जवाब मिल गइल । बलुक कहीं कि मातृभाषा के पहचान हो गइल ।

बाद में नऊआँ वर्ग में पढ़े के समय स्वाध्याय प्रेमी चौबे जी लाल बिहारी दे के किताब "फॉकटेल्स ऑफ बंगाल" पढ़लीं त अपना क्षेत्र के दंत–कथा संग्रह करे खातिर प्रेरित भइलीं । मोतिहारी कलक्टरी में सेवा के दौरान ऊहाँ के कलक्टरी के पुस्तकालय में राय बहादुर शरचन्द्र राय के छोटनापुर आदिम जन–जाति पर लिखल सभ किताब पढ़ गइलीं । अतने ना, ऊहाँ क रिस्ले, डाल्टन, ओ मोले आ ग्रियर्षन के किताब पढ़ली। उहाँ के बिहार–ओड़िसा रिसर्च सोसाइटी के जर्नल के सब उपलब्ध अंक पढ़ गइनीं । चौबे जी अइसही विद्वान ना बनि गइनीं । जोख के खाये से केहू पहलवान ना बनि जाये । ज्ञान संपदा के उपलब्धि प्रतिभा, परिश्रम आ लगन–लगाव के समानुपाती होला । लेखक चौबे जी के ज्ञान–संपदा के उपलब्धि के बारे में कार्य–करण के सटीक

www.bhojpurisahityangan.com

अनुसंधान कइले बाड़न । एह अध्याय में चौबे जी के संग्राहक वृत्ति के उल्लेख बा, जवन युवा पाठक खातिर प्रेरणादायक बा । अतने ना, चौबे जी स्वाध्याय के साथे सरकारी आ स्वयंसेवी साहित्यिक संगठन से सक्रिय रूप से जुड़ल रहीं । उहाँ के कवनों रचनावली–ग्रंथावली आ संकलन त प्रकाशित बा ना, बाकी लेखक के अथक प्रयास सराहनीय बा कि चौबे जी के तमाम रचनात्मक गतिविधियन के सूचना विवेच्य पुस्तक में संकलित कइले बानीं ।

तीसरका अध्याय में गणेश चौबे जी के लोक साहित्य आ शिष्ट साहित्य विषयक लेखन आ संपादन कार्य के विस्तृत उल्लेख बा । अपना प्रचुर लेखन बा चौबे जी के बाकी पुस्तकाकार कवनो संकलन के अभाव में शोधार्थी लेखक के चौबे जी द्वारा लिखित निबंधन के शीर्षक, जवना पत्रिका में रचना प्रकाशित भइल, कब प्रकाशित भइल, कतना पृष्ट में प्रकाशित भइल–के सूची क्रमवार देवे पड़ल बा । इ बड़ा श्रमसाध्य बा, बाकिर चौबे जी के कृतित्व सामने लावे में सफल बा। डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के अनुसार चौबे जी के लिखल लेखन के संख्या 250 से ऊपर बा । अतना में दस गो किताब प्रकाशित हो सकेला ।

उल्लेख पुस्तक के चउथा अध्याय पंडित गणेश चौबे के लोक गीत विषयक अध्ययन, अनुसंधान, संग्रह आ संपादन कार्य में विश्लेषण पर केन्द्रित बा । ई कहल जा सकेला कि लेखक बिक्रम कुमार सिंह एह अध्याय में गणेश चौबे जी के लोक गीत आ भोजपुरी लोक गीतन के बारे में आलोचना दृष्टि के समझे के रचनात्मक प्रयास कइले बाड़न । एह संदर्भ में लेखक लोक गीत के बारे में विद्वान डॉ. मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' आ डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य के लोक–गीतन के बारे में अभिव्यक्त विचार के उल्लेख करत बाड़न । डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य के अनुसार ''भोजपुरी क्षेत्र'' के निवासियो का जीवन ही संगीतमय है । शायद ही देश के अन्य जाति होगी जिसपर संगीत का इतना बड़ा प्रभाव हो । प्रत्येक वर्ष त्यौहार, उत्सव के अवसर पर उनके अनुकूल भोजपुरी लोकगीत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ।'' मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' द्वारा भोजपुरी लोक–गीतन के सब प्रकार के वर्गीकरण अध्ययन आ विश्लेषण सब दृष्टि से सार्थक बा ।

चौबे जी द्वारा भोजपुरी लोकगीत संग्रह के काम ऐतिहासिक बा । विध्यांचल प्रसाद श्रीवास्तव के अनुसार चौबे जी दस हजार भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

लोकगीतन के संग्रह कइनीं । ए लोकगीतन के सहारे भारतीय लोक संस्कृति के इतिहास लिखल जा सकेला । एकर संरक्षण जरूरी बा । जे एकर महत्व ना समझी ऊ संरक्षण के प्रयास का करी । राजनेता आ नौकरसाह बहुत कम बारे जे लोक संस्कृति के संरक्षण के महत्व बुझत बाड़े । ओइजा त रातों–रात अमीर बने के सपना हिलोर मारेला । लोक संस्कृति के बचले पर देश के आजादी बाचीं । लोकगीत विषयक लेखन के अध्याय में लेखक चौबे जी के भोजपुरी लोकगीत विषयक लेखन के सूची दे देले बाड़न । इहाँ चौबे जी के लोकगीत विषयक लेखन के रचनात्मक विवेचना बा ।

पॉचवॉ अध्याय– पंडित गणेश चौबे के लोकगीत से इतर लोक साहित्य, लोकवार्त्ता विषयक, लेखन, संग्रह आ संपादन कार्य पर केन्द्रित बा । एह अध्ययन के विस्तार 32 पृष्ट में बा । लोकगीत के अतिरिक्त लोक साहित्य, लोकगाथा, लोक कथा, लोकनाट्य, लोकोक्ति आ मुहाबरा के रूप में लिखल–छितराइल रहे आ अबहूओ बा । लेखक एह अध्याय में लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य आदि के परिभाषित कइले बाड़न । चौबे जी उपरोक्त विषयन पर हिन्दी, अंग्रेजी आ भोजपुरी तीनों भाषा में आ लेख लिखली । सबसे बेसी हिन्दी में सोलह गो आलेख लिखनीं, अंग्रेजी में चार गो आलेख लिखनीं, आ भोजपुरी में चार गो आलेख लिखनीं । समस्त हिन्दी शब्द के भोजपुरी लोक कथन, लोक गाथा, लोक नाट्य आ लोकोक्ति मुहाबरा के प्राचीन परम्परा से अवगत करावल जरूरी रहें । समस्त अंग्रेजी आ भारतीय विद्वान, विदुषी लोगन के भी भोजपुरी लोक संस्कृति के प्राचीनता के बारे में बतावें के रहें । ऊ भोजपुरी साहित्य के खातिर जरूरी त रहलें रहें । एह उल्लेख में धार्मिक नृत्य, 'कीर्तन' आ 'भगता', 'युद्ध नृत्य' गदका, आ फरी, पुरूष नृत्य आ रावली आदि के विस्तृत चर्चा बा ।

छठा अध्याय लोक साहित्य से इतर साहित्य, कोश, ग्रंथ–सूची, साहित्यिक समीक्षात्मक लेखन कार्य के विश्लेषण पर केन्द्रित बा । अंग्रेजी में एगो मुहाबरा बा 'फर्स्ट डिजर्व एण्ड देन डिजायर' माने पहले योग आवे तब कामना करीं । एगो आउर मुहाबरा बा कि 'अकिल खाक ना तनखाहें बढ़ा दी' भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल करावें खातिर बैचेन बानी आ रउरा भोजपुरी साहित्य लगे एगो शब्द कोश नइखे । भोजपुरी शब्द कोश निर्माण खातिर पंडित गणेश चौबे जी

www.bhojpurisahityangan.com

बरिसन अथक प्रयास कइली । भोजपुरी हिन्दी शब्द कोश 1999 ई. में सेतु न्यास, मुंबई के ओर से विश्व भोजपुरी सम्मेलन (राष्ट्रीय इकाई), 105914, डॉक्टर रघुबीर नगर (छोटा पार्क पश्चिमी) देवरिया द्वारा प्रकाशित बा । भोजपुरी साहित्य के इतिहास हिन्दी साहित्य के इतिहास में समा गइल । चौबे जी भोजपुरी साहित्य के सूचीबद्ध कइनी । सन् 1983 में 'भोजपुरी प्रकाशन के सई बरिस' प्रकाशित करवनी बिहार भोजपुरी अकादमी से । ई ग्रंथ सूची ग्यारह भाग में बाँटल बा । 1. काव्य–साहित्य, 2. कथा–साहित्य, 3. नाटक, 4. निबंध–साहित्य, 5. पाठ्य–पुस्तक, 6. शब्दकोश, 7. व्याकरण आ भाषा–साहित्य, 8. रस, छंद, अलंकार आ साहित्य शास्त्र, 9. पत्र–पत्रिका, 10. लोक–साहित्य आ 11. प्रशिष्ट । माने साहित्य के हर विधा में भोजपुरी साहित्य उपलब्ध बा । भोजपुरी खाली बोली ना ह, एगो साहित्य ह । भारत में 2 लाख 26 हजार 4 सौ 49 लोग अंग्रेजी के आपन मातृभाषा बतअवलक आ तीन करोड़ तीस लाख 99 हजार चार सौ 97 लोग भोजपुरी के आपन मातृभाषा बतअवलक । देश के हर विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के विभाग बा, प्रोफेसर बाड़न । बाकी भोजपुरी भाषा के राजनीतिक मान्यता नइखे ।

विवेच्य पुस्तक के लेखक डॉ. बिक्रम कुमार सिंह के निष्कर्ष से बेहिचक सहमति जतावल जा सकत बा कि पंडित गणेश चौबे जी के विस्तृत लेखन पुस्तकाकार प्रकाशित नइखे । ई सभ पत्र–पत्रिकन में छितराइल बा । जवना के चलते उहाँ के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर शोध कार्य अर्थसाध्य आ श्रमसाध्य दूनों बा । पंडित गणेश चौबे के भोजपुरी साहित्य लोक संस्कृति खातिर अविस्मरिणीय योगदान बा। उहाँ के व्यक्तित्व–कृतित्व के एगो पुस्तक में प्रस्तुत करे खातिर डॉ. जयकांत सिंह 'जय' डॉ. ब्रजभूषण मिश्र आ शोधार्थी डॉ. बिक्रम कुमार सिंह के अथोर साधुवाद बा ।

संदर्भ : भोजपुरी के विश्वकोश : पंडित गणेश चौबे, **लेखक** : डॉ. बिक्रम कुमार सिंह, **प्रकाशक** : हर्फ पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110058

–मदनजी का हाता, जीविका कार्यालय के पास आरा–802301, बिहार, मो0: 9931171611, 8544620509

***

www.bhojpurisahityangan.com

नाटक

भोर के लाली
उर्फ
नयकी पतोह

❑ सुरेश कांटक

पात्र : पुरुष

1. नगेसर
2. रंजन
3. रामानुज
4. कमलेस
5. प्रकाश
6. नट
7. विदूषक
8. गायन मंडली

पात्र : स्त्री

1. नगेसर के मेहरारू
2. कमला
3. पड़ोसिन
4. पुष्पा
5. नटी

पूर्व झलक : एक

{मंच पर एक तरफ बादक दल बइठल बा । गते–गते कवनो गीत के धुन बजावत बा । तबही नट–नटी आवत बा लोग । अपना धुन में एगो गीत बारी–बारी से शुरू क देता लोग ।}

नट : मरलस जमानावा के कवन निरदइया

www.bhojpurisahityangan.com

समइया सभके, लीलेला रे मोरे भइया
समइया सभके..... ।

नटी : खेतिया आकासबा के इन्दर सहइया
मिठइया लागे तीते हो मोरे भइया
समइया सभके..... ।

नट : पछेया बयार बहे रोवे पुरवइया
दवइया जान लेवे ला हो मोरे भइया
समइया सभके..... ।

नटी : नदिया पोखरवा सूखल, टूटि गइल नइया
रोवइया सुन गइया के हो मोरे भइया
समइया सभके..... ।

नट : देख–देख उलुटा बहेली गंगा मइया
कसइया कवन नाचेला हो मोरे भइया
समइया सभके..... ।

{एही घरी बिदूषक अपना अटपटा भेष में आवत बा आ नट–नटी के डॉटत बा ।}

बिदूषक : बंद कर लोग नाच–गाना ।

(नट नटी थथम के खड़ा हो जाता लोग । वादक धुन बंद हो जाता । नट पूछत बाड़न ।)

नट : काहे ? काहे बंद होई नाच– गाना ? नाच–गाना भोजपुरिया जिनगी के आधार ह !

बिदूषक : काहें ना होई ?

नटी : अरे भाई, कारन त बताव ?

विदूषक : सुन, बतावत बानी ।

धह–धह जरता समाज अरु देश हो
तहरा बुझात नइखे सहे सभ कलेस हो
फूल कबरात बा आ काँटवा रोपात बा
देसवा के कल कारखानवा बेचात बा
हावा में उड़त बाड़ें नयका नरेस हो

घरे–घरे नयकी पतोह भइली रानी
सास आ ननद उनुकर भर ताड़ी पानी
अँखिया देखावे रोज मारे रोज ठेस हो
बबुआ बेकार नाहीं नोकरी के भेंटाता

www.bhojpurisahityangan.com

चुपे–चुपे पइसा से नोकरी बेंचाता
थपरी बजावे सभ देसवा विदेस हो

नट : साँच कि झूठ ? (बीचे में नट टोक देत बाड़न) ।

विदूषक : साँच ! सोलहो आने साँच ! एमे तनिको नइखे आँच । मन करे त क ल जाँच !

नट : देखइब ?

विदूषक : हाँ, देखाइब !

नट : त देखाइए द । बंद हो गइल नाच–गान ।

विदूषक : चल हमरा संगे । अबहीं देखा देत बानी !

नट : चल !

(तीनों जाना जात बा लोग । झलक एक शुरू होता ।)

झलक : एक

(नगेसर अपना दुआर प प्लास्टिक वाला कुरसी प बइठल बाड़न । कुरसी के आगे एगो बैंच लागल बा । ओही प गोड़ पसरले बाड़न । धोती आ कुरता पेन्हले बाड़न । कान्ह प बड़की गमछी लेले बाड़न । गमछी नीचे तक झूलत बा । मस्ती में कवनो भोजपुरिया गीत गुनगुनात बाड़न । एही घरी रामानुज आ कमलेस आवत बा लोग आ टिबोली बोलत बा लोग ।)

रामानुज : का नगेसर भाई, बड़ा चैन के बाँसुरी बजावत बाड़ । मउज बा नू ?

कमलेस : (नगेसर के बोले के पहिलही बोल देत बाड़न) इनिकर बात कहे के बा भाई । एह घरी इनिकर भूत हर जोतत बा । (हँसत बाड़न) पाँचो अँगुरी घीव में डूबल बा ।

नगेसर : आवते तिबोली बोल देल लोग नू ! ब इथ लोग । ब इथ । कह केने चलल बाद लोग ?

रामानुज : (बेंच प बइठत बाड़न । कमलेसो के बइठावत बाड़न ।) चलनी हा जा तहरे भीरी । जवार में शोर क देल । डंका बाजि गइल तहरा नाव के । नीमन कनियो पा लेल आ दानो–दहेज से घरो भर लेल ।

कमलेस : भुतजेवर मत बर रामानुज भाई । सीधे–सीधे कह, जवन कहे आइल बाड़ । नगेसर भाई खरचा करस । कहियो पाटी देस । खूब खाइल पीयल जाय ।

www.bhojpurisahityangan.com

नगेसर : खाए के नाव ल लोग, पीये के नाव मत ल लोग । सरकार पीये प रोक लगवले बीया । सूँघत चलत बाड़न स । ठेल दीहें स जेल में ।

रामानुज : चुप–चाप ना रहब । रोक कवनो चीज प नइखे लागल । दाम बढ़ गइल बा । जतना खोजब ओतना मिलत बा ।

कमलेस : पहिलहूँ से अधिका ! धकाधक चलत बा धंधा !

नगेसर : अइसन बात नइखे । पीये वाला डेराइल त बाड़न । थाना पुलिस चउकस बा ।

रामानुज : चउकस ना जे कपार बा । खूब माल खींचत बा आ बेचवावत बा । पहिलहूँ से अधिका बेचाता । चुआवल जाता । पइसा फेंक तमासा देख ।

कमलेस : हँ नगेसर भाई ! रामानुज सही बात कहत बाड़न । थाना सिपाही के आमदनी कइ गुना बढ़ गइल बा । कउआ टराता धान सूखत बा । पइसा द । कतल कर । जतना कह, ओतना ले आ देब । गंगा पार से रेला लागल बा । गाँवे–गाँवे चूवत बा तवन अलगे ।

नगेसर : छोड़ भाई, पीये वाला के पीये द । चुवावे वाला के चुवावे द । कमाए वाला के कमाए द । हमनी के बाप के का जाता ! जे गद्दी पर बइठल बा उहो त सात पीढ़ी खातिर कमाइए लेता ।

रामानुज : एकर मतलब कि खरचा ना करब ? सभ तिलक बचा के घ लेब ?

नगेसर : बाँचल कहवाँ रे मरदे ! ओकरो से अधिका खरचा हो गइल । देलहीं का रहे ?

कमलेश : फेनु झूठ बोले लगल नू ? लइकी वाला आपन खेत बेंच के तहरा के तिलक के पइसा देलस । अपना भाई के धन भी तहरा के दे देलस ।

रामानुज : भाई के धन त देबे कइलस, लइकियो खूब सुघर आ पढ़ल–लिखल देलस । अब का चाहीं तहरा ? ओकर घरवा दुआरवा ले लेब का ?

नगेसर : तहरे बुझाई सब कुछ ? तिलके से काम चली ? दहेज जवन गंछले रहे उ पूरा ना नू कइलस ।

कमलेस : सभसे बड़ चीज आपन इज्जत तहरा के दे देलस हो, अब का खखाइल बाड़ ?

नगेसर : हम खखाइल बानी कि हमार मलिकइनिया रोज हमार कपार

www.bhojpurisahityangan.com

नोचत बिया । ठगा गइनी । दहेज पूरा ना देलस । फलनवा के घर भर गइल बा, ओकरा बेटा के दहेज से । हमार करमे जरल रहे । हमरा बेटा के करम जरल रहे । तहरा बुझाइल ना । ओकरा झाँसा में आ गइल । लइकिये देख के भुला गइल ।

रामनुज : मलकिनिया के समुझाव । सुन्नर बेकत धन दउलतसे बड़ चीज ह ।

कमलेस : ए नगेसर भाई, बात में बझाव मत हमनी के । साफ़–साफ़ बता द । खरचा करब कि ना ?

नगेसर : निपटे भुक्खड़ हव लोग का ! तहरा त खरचे के धुन धराइल बा । हमरा घर में रोज बिरदंग बाजत बा । मेहरारू जीए नइखे देत । फलनवा के बेटा के बिआह में हइ मिलल बा । फलनवा के हऊ मिलल बा । हमार करम जरल रहे । तहरा लेबे ना आइल ।

रामानुज : अब का लेब गाँव ? भाग रे मरदे ! जवन मिलल तवने प संतोष कर । कमा के देले रह का बेटिहवा के ? चिरई के जान जाय, खबइया के सवादे ना मिले ! ऑय ! अपना बेटी के बिआह करब तब बुझाई । ओह घरी त कहनरे लगब नू !

नगेसर : का बुझाई हो ? हमरा कुछ ना बुझाई ! जतना में बानी ओतने में गोड़ पसारब । करज काढ़े ना जाइब ।

कमलस : ए रामानुज भाई, एह तीसी तेल नइखे । चल एहिजा से । धान के गाँव पुअरे से चिन्हा जाला । नगेसर सभ हथवस के घलेलन । पसेनो ना चूई इनिका गाँसा में से ।

रामानुज : हाँ हो नगेसर भाई ? हाथी–हाथी शोर भइल हाथी पदलस टी !

कमलेस : सुनत नइख इनिकर बात ! लइकी खातिर जतना में बानी ओतने में गोड़ पसारब । आ लइका खातिर बोरा के मुँह खोल के राखब । मतलब कि लइकिया के कइसनो घर में भाठ देब । गाय के पगहा धरा देब कवनो कसाई के हाथे । उ कुछ बोली !

रामानुज : बोली काहें ना ! बोली ! बोलबे करी । अब उ जबाना गइल । लइकी साफे नकार देत बाड़ी स । हम एह लइका से बिआह ना करब । (एही घरी भीतर से आवाज आवत बा नागेसर बो के ।)

www.bhojpurisahityangan.com

आवाज : मजलिस लगा के बइठल बाड़न नू ! इनिका बुझाता कि घरे कवनो काम बा कि ना । बिना काम धंधा के आदमी आ गइल बाड़न स । बझवले बाड़न स मनचहल में । एह आदमिन के तनिको विचार बा कि हमरा त कवनो काम धंधा नइखे एह अगिला के काम काहें अकाज करत बानी । ऑय !

कमलेस : (रामानुज से) सुन लिहल नू ?

रामानुज : हॉ, सुन लिहनी ।

कमलेस : चल, फुट एहिजा से । कहनी हॉ नू कि एह तीसी तेल नइखे ।

रामानुज : हा हा हा (हँसत बाड़न) राम मिलवलन जोड़ी, एगो आन्हर एगो कोढ़ी । चल भाई चल । जल्दी भाग एहिजा से । ना त अवरू कुछ सुने के मिल जाई । (दूनो जाना जात बा लोग । नगेसर मेहरारू के बात से पिनपिनाइल बाड़न । कुछ बोलत नइखन । रामानुज के व्यंग्य सुन के तिलमिलात बाड़न आ घूर के ओह लोगन के देखत बाड़न । फेरू अपना घर के भीतरी जात बाड़न ।)

झलक : दू

(कमलेस आ रामानुज राह में बतियावत जात बा लोग ।)

कमलेस : तूहूँ गजबे आदमी बाड़ ।

रामानुज : का भइल ?

कमलेस : असहीं बोलल जाला ! नगेसरा के बड़ा दुःख लागल बा । ओकर मुँह ना नू देखल हा !

रामानुज : लागे द । दुःख लागे चाहे सुख । सही बात कहाइयो जाला ।

कमलेस : मउगी सुनले होई त ओकरो मरीचा लागल होई ।

रामानुज : लागे द । हमनी के का बोलल हिया, ना सुनला हा ! असही बोलल जाला ? गते से अपना मरदा के भीतरी बोला के समुझित, हमनी के सुनवला के का जरूरत रहल हा ?

कमलेस : ओकरो दुःख लागल होई ।

रामानुज : त हम का करीं ? नगेसरा मेहर मउगा ह । कपार प चढ़वले बा मेहरारू के । सॉच पूछ त हम एकरा के ना कहनी हा ।

कमलेस : तब केकरा के कहल हा ?

रामानुज : एकरा समधिया के कहनी हा ।

www.bhojpurisahityangan.com

कमलेस : ई काहें ?

रामानुज : उहो ससुरा अपना बेटी के बिआह खातिर अपना सहोदर भाई के जान मार देले रहे । मेहरारू के कहला में ।

कमलेस : ऑय !

रामानुज : हँ हो !

कमलेस : काहें ?

रामानुज : ओकरा धन खातिर । भाई के धन खातिर । लइकी के बिआह खातिर तिलक जुटावे खातिर । दादा हो दादा ! ऊ दृश्य देखत करेजा फाटत रहे । आ छोट भाई के मेहरारू कइसन कि ओह हत्यारा हत्यारिन के बेटा बेटी के अपना गोदी में सटा लेलस । 'भाई के धन' नाटक नइख देखले नू ?

कमलेस : ऊँहूँ !

रामानुज : मोका मिले त देख लीह । गारंटी बा कि रो देव । ऊहो नाटक सुरेश कांटक के लिखल ह । चल आपन काम धंधा देख । लात मार नगेसरा के मिठाई प ।

कमलेस : हँ रे मरदे ! कहत बा कि घर में बिरदंग बाजत बा । हमनी के मिठाई के भुक्खड़ बानी जा हो ! ई त प्रेम के चीज ह ।

रामानुज : जइसन करनी ओइसन भरनी । मिरदंग बाजे चाहे तबला ! हमनी के का मतलब ।

(मंच प अन्हार होता ।)

पूर्व झलक : दू

(मंच प अँजोर होता । विदूशक अपना रंग–बिरंगा भेस में आवत बा । एगो कविता पढ़त बा ।)

रात बा अबहिन
सूत ल खूब
पत्थर प ना जामी दूब
भोरे जागि के
करब का तू
बड़े भाग से मिलल नीन
देह बनाव मउज उड़ाव
हो जइब कउड़ी के तीन
बड़ जेठन के लाते मार
बोले ओकर छान्ह उजाड़

www.bhojpurisahityangan.com

हो जा गरम कि जइसे टीन
देह में निकहा बाते हूब
रात बा अबहिन.....

पियऊ घूँघ उठइहें जबहीं
चन्दा देख चकइहें तबहीं
बनि के बाली जोर तू खींच
सब भुलिहें अगरइहें सबहीं
चाल चल मनमानी उड़
पँवर खूब न जइह डूब
रात बा अबहिन.....
गरजत तड़पत बदरी बरसत
नवहिन के जिनगी ना हरसत
दुपहरिया में दिखे तरेंगन
राहू केतु चउतरफा गरसत
लागल बा लोहा जंगल में
भीतर–भीतर चिनगारी सरसत
का करब उड़ि जाई चिरई
ना रही देहिया में हूब
रात बा अबहिन्.....।

(विदूषक चुप हो जाता त नट पूछत बा ।)

नट : आपन त कहि लिहल । हमरो सुनब ?

विछूषक : काहें ना । सावन से भादों काहें कम रही ? सुनाइए द । घर आइल बिया नयकी पतोह । बाहरी देश दुनिया कइसे चलतबा, इहो त जाने के चाहीं ।

नट : काहें ना । जरूर ! जरूर ! (नटी से कहत बाड़न) आव हो हमार रानी । तहरे के ताकत बा सभ गॉव राजधानी! फूँकीं जा कुछ अइसन तान कि जाने सऊँसे दुनिया जहान !

नटी : त शुरू करीं ! हम त रउवा लगवे बानी ! आग चाहीं कि पानी ? (नट गावत बाड़न । नटी साथ देत बाड़ी ।)

काहें अइसे चलेलू उतान ए चिरई
रहबू ना असहीं जवान ए चिरई
झॉसा देके लोगवन के काहें भरमावेलू
चकमा में डारि–डारि सपना देखावेलू
बेंचि दिहलू आपन सभ सामान ए चिरई

www.bhojpurisahityangan.com

असहीं ना रहि जाई माया के बजरिया
कपरे प बाटे तहार बइठल सिकरिया
करी तोहके ऊहे हलकान ए चिरई
अबहिन बनल बाड़ू नीमन तू बहुरिया
सास बनि जइबू तब होखबू पतुरिया
भागि जइबू छोड़ के हिन्दुस्तान ए चिरई
काहें अइसे चलेलू उतान ए चिरई
रहबू ना असहीं जवान ए चिरई

(गीत खतम होता । मंच प अन्हार होता ।)

झलक : दू

(नगेसर के आँगन । मेहरारू मुँह फुला के किनारे बइठल बिया । नगेसर बहरी से आवत बाड़न । मेहरारू से पूछत बाड़न ।)

नगेसर : का हो, कहँवा घीव के गगरी ढरकत बा कि आफत मचवले रहलू हा ? हीत मीतर के सोझा आपन चाल देखा देलू हा !

मेहरारू : (झझकि के) आहि रे आहि ! अइल ! आ गइल कमाई क के ! बतकूचन में कवन भूँसाकुटात रहल हा ? उलुटे हमरेप तान तूरत बाड़ । हमरे चाल देखत बाड़ !

नगेसर : हरदम कपारे प मत चढ़ल रह । कुछ सोच समझ के बोलल कर । उमिर ढलत बा । अबहूँ बोली के लगाम द। काम न धंधा पॉच रोटी बंधा !

मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ! हई देख हो, तू कवन कमाई करे गइल रहल हा ?

नगेसर : कमाई–धमाई मत देख ! कह, का घटल बा ? काहें खातिर घुमगज्जर मचवले बाड़ू ?

मेहरारू : धुमगज्जर नइखीं मचवले । असल के हव त एकरा के समझा द ।

नगेसर : केकरा के ? जवान सँभाल के बोल ! असल कमसल मत बनाव ।

मेहरारू : अपना पटरानी के ! अबही ले सूतल बाड़ी ! चूल्हा चाकी के फिकिर नइखे ! हम बनाइब त ई खइहें !

नगेसर : त का भइल ! मतारी बनावेले त बेटी खाले ना ?

मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ना ! हई देख लोग हो ! ऊ हमार सास हई ! हम उनुकर पतोह उतरल बानी ! कहिया के बेटी

www.bhojpurisahityangan.com

हो ! हमरा बेटी नइखे का कि बेटी के सवख पुराई ।

नगेसर : त का भइल ! नया नोहर बिया । ऑखि लाग गइल होई।

मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ना ! हई देख हो ! नया नोहर बिया ! हमहूँ त नया नोहर रहीं ! हम कहिया नव बजे ले सूतत रहीं !

नगेसर : आपन बात छोड़ । ऊ दोसर ज़माना रहे । अब दोसर समय आ गइल बा । तू अनपढ़ रहू । ऊ पढ़ल–लिखल लइकी बिया । तहरा बेरा गोंइठा लकड़ी प धुऑ धुकुर होत रहे । अब गैस के चूल्हा आ गइल बा ।

मेहरारू : आह रे आहि ! पढ़ल–लिखल बिया ! भला कह ना ! हम अनपढ़ रहीं । एही से मुरुगा बोलते उठ जात रहीं ! चूल्हा चाकी लीप लेत रहीं । भोरहीं सास के चाह बना के दे देत रहीं । तब सब केहू जागत रहे । हई देख हो ! ई हमरे के समुझावे आइल बाड़न ! ई त हमरा बेटियों के बिगारल चाहत बिया । कहत बिया कि खूब बढ़िया से पढ़ । घर के काम के फेर में कम रह । पढ़ला से बढ़िया कवनो काम नइखे । बताव भला ! हमार लइकिया काम ना सीखी त ससुरा में मार बिल मार बिल करिहें स कि ना ?

नगेसर : ठीके कहत बाड़ू । कतना खराब बात कहत बिया ! पढ़े–लिखे के कहत बिया ! भला अइसे करे के चाहीं ओकरा ! (मुसुकात बाड़न)

मेहरारू : गाभी मत मार ! हम तहार कुल्हि गाभी समुझत बानी ।

नगेसर : तहार जबाना लकड़ी गोईठा के रहे । आज के जबाना गैस चूल्हा के बा । समय बदलत बा तूहूँ बदल ! कतना हाली कहीं ?

मेहरारू : जइसे हमरा के समुझावत बाड़ ओइसे ओकरो के समझाव ! कि हम लऊँड़ी अस खटत रहीं आ ऊ भतार लेके सूतल रहो !

नगेसर : राम राम राम ! कहँवा तहार दिमाग बा दादा ! ओकर भतार तहार बेटा नू ह हो ? अपना बेटा खातिर अइसन बात केहू निकालत होई !

मेहरारू : आह रे आहि ! भला कह ! हम अपना बेटा खातिर थोड़े कहत बानी !

नगेसर : तब केकरा खातिर कहत बाड़ू ?

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारू : हम त ओह भछनी खातिर कहत बानी !

नगेसर : ऊ भछनियो त तहरा बेटे खातिर नू आइल बिया !

मेहरारू : एही से नौ बजे ले सूतल रही आ हम खाना बना के दीहीं ? ओकरा बाप के लउड़ी हई कि ओकर लउड़ी हई ? तू हमार मरद नू हव आ ओकर पछ लेत बाड़ ! कि नया नोहर देख के तोहरो लार टपकत बा ?

नगेसर : (खिसिया के) अरे हरामजादी ! ई का कहत बाड़े तोरा कुछ बुझाता ! ऊ हमरा बेटी जइसन बिया नू रे ! ते सोच समुझ के बोलल कर । ना त ठीक पटरी ना खाई ! अइसन बदमास मेहरारू भगवान् दुश्मनों के मत देस ।

मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ना ! हई देख लोग हो (दर्शक लोग से) पतोह के आवते हम बदमास हो गइनी । ऊ सात पानी के पखारल हो गइल ! जहाँ मिले रस तहाँ जाके फँस ! ई ना कि ओकरा के समुझाई ! राह रास्ता सिखाई ! ई काहें के ! ओने रस नू मिलत बा ! हमरा में अब का बा !

नगेसर : फेरु बोलत बिया बदमास ! चुपइबे कि हम जाईं इहँवा से ! इहे बुधी रही त आगे चल के बड़ा दुःख होई ! समुझ ले !

मेहरारू : आहि रे आहि ! बड़ा दुःख होई ! तू सुख भोगिह रानी के ले के ! अपना के झख ! हमार चिंता छोड़ ! ना रहब त कनवो घाट के ना रहब ! हम त कसहूँ भीख टुकड़ा माँगि के जी लेहब ! तहरा के कवनो एक लोटा पानी ना दीहें स ।

नगेसर : हे भगवान (अपने आप से) ई अध दिमागी अब इज्जत ना रहे दीही ! ई का बोलत बिया, एकरा बुझाते नइखे ! एह उमिर में एकरा के मारलो पीटल ठीक नइखे ! गारियो देला से आपने जबान खराब होई ! (चुप हो के सोचत बाड़न) ।

मेहरारू : बोली बंद हो गइल कि ओकरा के समुझइब बुझइब ?

नगेसर : हम ओकरा के का समुझाई ! ऊ खुदे समझदार बिया ! पढ़ल–लिखल लइकी बिया कुछ दिन बाद अपने समुझ जाई ! तेहीं समझ बुझ के रहू ! ओकरा के अपना बेटी अस जान !

मेहरारू : आहि रे आहि ! पढ़लकी त अबरू गोबर खात बाड़ी स ! ना केहू के डर बा, ना कवनो गतरी लाज बा ! झोंटा उघार के ससुर भसुर केहू के सोझा चलत बाड़ी स । पढ़ाई प टिमाक बा ! बुधियो बिचार त होखे के चाहीं पढ़ल–लिखल अस !

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा से अइसे ना चली ! पहिलहीं बता देत बानी !

नगेसर : त अपना बेटवे के समुझाव । ऊ अपना मउगी के समुझाई नू!

मेहरारू : आहि रे आहि ! ऊहे भल रहित त का कहे के रहे ! ऊ त अवरू मेहर मउग हो गइल बा ! ऊहे ओकर माई हो गइल बिया ! माई ओकर दाई हो गइल बिया ! ऊ ओकरा के समुझाई कि हमरे के उलुटे ऑखि देखाई ! ना त रस ना नू भेटाई !

नगेसर : (उजबुजा के) ई मलेछिन केहू के ना छोडी ! एकरा पतोहियो से सवातिया ड़ाह हो गइल बा ! बोली अइसन कुकाठ बोलत बिया कि मन करत बा कि एकरा के नीके लतवस दीहीं ! बाकिर इहँवा से हटले में भलाई बा ! मेहरारू के मुँहे लागल ठीक नइखे ! (अपने आप से) चल हे मन बाहरी चल । एकरा के अरगना परगना गावे द ।

(चुपचाप बाहरी निकल जात बाड़न)

झलक : तीन

(नगेसर के मेहरारू भोरही भोरे आँगन बहारत बाड़ी आ अपना मने बड़बड़ात बाड़ी ।)

नगेसर के मेहरारू : का जाने कवना खानदान के आइल बिया । एकरा नजरी में तनिको पानी नइखे । मरद के मति मार लेले बिया । सुरुज उगला ले सूतल रहत बिया । एगो हमनी के रहीं जा । केहू जानते ना रहे कि कब मरद संगे सुतनी आ कब जगनी । सास ननद के जागे के पहिलही झाड़ू बरतन क के, चूल्हा चुहानी लीप के, तैयार क देत रहीं जा । रात में कबो सास के बिना तेल लगवले सूतत ना रहीं जा । सभका बाद सूतत रहीं जा । आ सभके पहिले जागत रहीं जा । एगो ई भछनी आइल बिया । ना जाने नइहर में का करत रहे । एकर बाप मतारी का सिखवले बा । अब त हमरा बरदास के बाहर हो गइल बा । एक दिन नीके फजीहत करब एकरा के । तब एकरा बुझाई । (जोर से चिचियात बाड़ी) का रे (पतोह के बाप के नाव ले के) रामायना बो ! लाज हया कुल्ही घोर के पी गइल बाड़ी का रे !

(कवनो आवाज नइखे आवत त फेनु बोलत बाड़ी ।)

नगेसर के मेहरारू : सुनात नइखे का रे रामायना के माई ! हम तोर लउड़ी हई का रे !

www.bhojpurisahityangan.com

(फेनु कवनो आवाज नइखे आवत त पतोह के घर के सिकड़ी खूब जोर से बजावत बाड़ी झन्न झन्न झन्न झन्नाक ! (दरवाजा खोल के ऑखि मीचत बहरी निकलत बाड़ी पतोह कमला । बोलत बाड़ी ।)

कमला : का अतहतह मचवले बानी भोरही भोरे ? सल्संत से रहीं आ सभके रहे दीहीं ।

नगेसर के मेहरारू: आहि रे आहि ! जगली महारानी ! सल्संत से जीहें । झाड़ू–बुहारू ना करिहें ! चूल्हा चाकी ना देखिहें ! खाना पानी ना बनइहें ! बइठले बइठल गपचिहें ! भला कह ना ! हमार सास हई ! हमार पुरधान हई ।

कमला : रउआ के के कहत बा करे के ? हम करब नू ! केकरा कहँवा जाए के बा ? कि गाड़ी छूटत बा ?

नागेसर के मेहरारू: हमरा घर में ई ना चली ! जा के सऊँसे गॉव में देखि आव त, केकरा घर के बेटी पतोह अबहीं ले फोंफ काटत होई ।

कमला : जाए दीहीं, दोसरा के दाज का देबे के बा ! रउआ कामे से नू मतलब बा ? हम तुरंते सबकुछ क देत बानी ! बाकी एक बात सुन लीं ! हमरा नइहर के नाव मत लिहल करीं ! बाबू माई के लगा के गारी मत दिहल करीं !

नगेसर के मेहरारू: त का करबे ? हमरा के धमकावत बाड़े ? ईहे तोरा बाप दादा के घर के चाल चलन ह ? लीलाम तिलाम करा देबे का ?

कमला : फेनु रउआ बाप दादा के निरखे लगनी नू ?

नगेसर के मेहरारू: हॅं, निरेखब ! का करबे ? हमार माई दादी हवे का कि ऑखि देखावत बाड़े ?

कमला : (खिसिा के) अम्मा जी बात बढ़ाई मत ! बेर बेर कहत बानी ! हमरा के मार दीहीं ! गारी दे दीहीं ! बाकिर बाप दादा के मत ले आईं बीच में ! हमार बाप दादा राउर कुछ जानत नइखे !

नगेसर के मेहरारू: आहि रे आहि ! त हम का जानत बानी ओकनी के रे ! तोर बाप भठियारा, बिआह में जवन करार कइलस अबहिन ले ना देलस ! ओही बाप के बेटी हवे नू ?

कमला : हम रावा गोड़ प गिरत बानी ! गारी फजीहत मत करीं ! ई सब भल आदमी के काम ना ह ! भल आदमी ई सब ना

www.bhojpurisahityangan.com

करे !

नगेसर के मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ना ! बड़ा भल बनल बाड़ी ! दू अछर पढ़ ना गइली, आसमान प चढ़ल बाड़ी ! ई टिमाक हमारा भीरी ना चली !

कमला : ठीके बा गरियाई । आवत बानी बाबूजी त कहत नू बानी ! ई रोज–रोज के पचरा, भोरे–भोर के भजन हमरा से बरदास नइखे होत !

नगेसर के मेहरारू : त जो अपना बाप के घरे ! पुछहूँ ना जाइब ! दोसर बिआह क देव अपना बेटा के !

कमला : का कहनी हँ ! बाप घरे जाई ! काहें जाईब बाप घरे ? हमार हक हिस्सा नइखे का इहँवा ? भगा के आइल बानी का ! हमार बाप तिलक गिनले बा ! उढ़री ना हई !

नगेसर के मेहरारू : आहि रे आहि ! भला कह ना ! हम बेटा बियइनी आ ई हक जतावे लगली । हइ देख लोग हो ! मुँह ना देखली हा आपन !

कमला : हमरा मुँह में का भइल बा कि हम मुँ देखी आपन ? हमार करमे जरल रहे कि हम आ गइनी एह घर में ! आवत बाडन राउर बेटा त फैसला करत नू बानी ! कि कइसे रहीं हम एह घर में ! रहीं कि ना रहीं ।

नगेसर के मेहरारू : जो जो, कह दीहें ! लीलाम तिलाम करा दीहें ! हमहूँ पूछब नू दूनो बाप बेटा से ! का चाहत बाड़न स ! हमरा चालीस बरीस उतरला हो गइल एह घर में ! आ ई दू दिन के छोकड़ी ! हमरा जमला बराबर ! हमरा के पाठ पढ़ावत बिया ! घर में एकर चली कि हमार चली ! ई रही कि हम रहब !

कमला : चली राउरे ! बाकिर गारी फजीहत बंद करीं ! हम रउआ मुँहे लागल नइखीं चाहत ! रउवा मुँह में अँगुरी डारि के बोलावावत बानी ! भगवान हमरो के बुधी विचार देले बाड़न ! कोदो के के नइखीं पढ़ल !

नगेसर के मेहरारू : आहि रे आहि ! हई देख हो, बुधी विचार वाली भइल बाड़ी ! कोदो दे के नइखी पढ़ल ! पढ़ाइए प टिमाक बा ! पढ़लकी से नीमन जहलवे बाड़ी स ! सास ससुर के लाते नइखी स नू मारत ! पढ़लकी त खाली भतार के चीन्हत बाड़ी स ।

www.bhojpurisahityangan.com

कमला : ठीके बा ! जवन जवन मनमें आवे कहि लीहीं ! हम बाबूजी से सम बात कहब ! के दोसी बा, कही लोग नू ! तनी मनी नींन लगला के चलते भोरे भोरे ई महाभारत बरदास नइखे होत !

नगेसर के मेहरारू : हमहूँ कहब । आवे दे ! दिने राती मोबाइल प बतियावत बिया संघतियन से ! किरिन फुटला ले फोंफ काटत बिया ! घंघरीपेन्ह के घूमत बिया ! नवहिन से नजर लड़ावत बिया ! ईहे नया नोहर बेटी पतोह के लूर लछन ह?

कमला : (आपन कपार पीटत बाड़ी) आहि ए भगवान् ! कइसे नया नया अछरंग उपराजत बाड़ी ! अब हम का करीं ! जा ए बाबूजी ! अतना पढ़ा लिखा के का कइल कि अइसन खोभाड़ में ले आ के भाठ दिहल ! हे भगवान् कहवाँ सूतल बाड़ !

नगेसर के मेहरारू : अबहीं अतने प भगवान् के गोहरावत बाड़े नू ! तोर कुल्हि खेला मदाड़ी बताइब तोरा भतार से ! तब देखिहे ! कइसे अंगेजत बा तोरा के ! हमरा से मुँह लड़ावत बाड़े नू ?

कमला : अम्मा जी, हम रावा गोड़ परत बानी ! झूठ–मूठ के अछरंग मत लगाईं ! मन के उपराजल बात मत कहब ! ना त का कहिहें ऊ ! का सोचिहें !

नगेसर के मेहरारू : का सोची रे ! तोर झोंटा ध के नचाई ! असल बाप के बेटा होई त तोरा के हरदी गुर पीया के छोड़ब ! आवे त दे ! लइका हमार नोकरी खातिर बने बने छिछिआइल चलत बा ! आ तें घर में बइठल मउज उड़ावत बाड़े ! अवरू ना त पिंगल पढ़त बाड़े !

कमला : ठीके बा । जवन जवन मन होखे तवन तवन करीं ! हम कुछ ना बोलब ! (कपार ध के बइठत बाड़ी । रोवत बाड़ी । मंच प अन्हार होता ।)

झलक : चार

(कमला के कमरा । कमला ठेहुना प माथ ध के उदास बइठल बाड़ी । सोचत बाड़ी अपना बचपन के बात । नइहर के घर आँगन याद आवत बा त रोवत बाड़ी । ढर ढर लोर गिरत बा । मन के बात फुसफुसाहट में निकलत बा ।)

कमला : का सोचले रहीं, का हो गइल ! सोचनी कि एगो माई छूटी त दोसर माई मिल जाई ! खूब मन से सेवा करब । कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

अइसन काम ना करब जवना से केहू के दिल दुखी होखे । बाबूजी छूटिहें त दोसर बाबूजी मिल जइहें । ओतने दुलार लगाइब । ओतने प्यार मिल जाई । घर ऑगन के चमका देब। जवन पढ़ले लिखले बानी ओकरा के करतब में ढाल के देखाइब । पास पड़ोस के लइकिन के पढ़ाइब । लइकिन के एगो स्कूल बनाइब । ओकनी के समाज में खाड़ा होखे के सिखाइब । गलत बात के विरोध करे के सिखाइब । एगो नया समाज बनाइब । बाकिर ई का हो गइल हमरा भाग में ! अम्मा जी हमरा बात के बूझत नइखी । हरदम अपना जमाना के बात दोहरावल चाहत बाड़ी । अब त गलत गलत अछरंगो लगावे लगली । अब हम का करीं ! कइसे सफाई दीहीं ! थाकल मन भोरही में निनिया देता । ओकरे नतीजा बा रोज के बिरदंग ! सोचत त रोज बानी कि अम्माजी के जागे के पहिले जाग जाईं । बाकिर पति के बात के कइसे टेर दीहीं ! ऊहो त अल्हड़ जवाने नू बाड़न ! अम्माजी के ई बात सोचे के ना चाहीं !

(एही घरी रंजन बहरी से आवत बाड़न । कुछ देर खाड़ हो के कमला के देखत बाड़न । कमला के ऑखिन से ढर ढर लोर चुअत देखि के उनुका भीरी बइठत बाड़न । उनुकर मूड़ी उठा के उनुका ऑखिन के पोछत बाड़न आ पूछत बाड़न ।)

रंजन : कमला ! का बात बा कमला ? तू रोवत बाड़ू ? का भइल हा ?

कमला : (कुछ देर चुप रहत बाड़ी । फेरु उनुका और देखत बाड़ी)

रंजन : बोल का भइल हा ? कुछ भइल बा का ?

कमला : (मूड़ी हिला के नकारत बाड़ी) ना ।

रंजन : त रोवत काहें बाड़ू ?

कमला : कपार दुखाता ।

रंजन : माई से ना कहलू हा ?

कमला : ऊँहूँ ।

रंजन : काहें ? माई से कहेला नू । कवनो दवाई आन देती । रूक हम कवनो दवाई ले के आवत बानी । (उठ के जाए चाहत बाड़न)

कमला : (उनुकर हाथ पकड़ लेत बाड़ी) रउआ मत जाईं । कतहूँ मत जाईं । अपने ठीक हो जाईं ।

रंजन : तू रूक ना । हम दू मिनट में आवत बानी । (खड़ा होखे के

www.bhojpurisahityangan.com

चाहत बाड़न)

कमला : (उनुका के बइठा लेत बाड़ी । उनुका कान्हा प मूड़ी ध के फफक फफक के रोवे लागत बाड़ी ।)

रंजन : (कमला के कपार प हाथ ध के सहलावत बाड़न ।) ई का करे लगलू ? का दुःख तकलीफ बा तहरा ? बताव हमरा से । (कमला के मूड़ी अपना कन्ह प से हटा के सोझा क के उनुका ऑखिन के लोर पोछत पूछत बाड़न ।) खाए के दुःख बा तहरा ?

कमला : ना (मूड़ी हिला देत बाड़ी)

रंजन : पेन्हें के कमी बा कवनो ?

कमला : ऊँहूँ ! (मूड़ी हिला देत बाड़ी)

रंजन : रहे के दिक्कत बा कवनो ?

कमला : ना ।

रंजन : तब काहें अतना वियोग से रोवत बाड़ू ? माई कुछ कहलस हिया ?

कमला : ना ।

रंजन : तब का दिक्कत बा तोहरा ?

कमला : अम्मा जी से पूछ लेब । उहॉ के का दिक्कत बा हमरार से ।

रंजन : (बात समझ जात बाड़न कि माई आजुओ कुछ बोलले बियां अच्छा अच्छा ! ई बात बा ! त साफ़ कहे के नू चाहीं । ठीक बा हम माई से बतिया लेत बानी । तू चुप रह । सॉझ के गाड़ी से जाये के बा । एगो इन्तहान देबे जाए के बा । हमार शर्त पेंट ठीक क द ।

कमला : पिछिला इन्तिहानवा के का भइल ? (आपन ऑखि पोछत पूछत बाड़ी ।)

रंजन : अबहिन कुछ ना भइल ।

कमला : कब ले होखे के उम्मीद बा ?

रंजन : कवनो ठीक नइखे । कइसे बताई ! एक अनार सइ बेमार वाली हाल बा ।

कमला : ना होई त का होई ? कइसे जिनगी कटी ?

रंजन : कटी नू ! जइसे सभके कटत बा, ओइसे हमनियो के कटी । आन्हर लंगड़ त बानी ना । लूल्ह अपाहिज नइखीं नू ? मेहनत मजूरी कइल जाई ।

कमला : हम एगो बात कहीं ?

www.bhojpurisahityangan.com

रंजन : कह ।

कमला : खिसिआइब ना नू ?

रंजन : ना हो । खिसिआइब काहें ?

कमला : हमरा के नइहर पहुँचा दीहीं । नोकरी चाकरी लाग जाई त बोला लेब ।

रंजन : ई का कहत बाडू ! माई बाबू बिआह काहें खातिर करेला बेटी के ? दोसरा के बोझा अपना कपार प ढोवे खातिर ?

कमला : हम दोसरा के बोझा हई ? ओह लोग के बेटी ना हई ?

रंजन : ना । जबले कुँवार रहू, ओह लोग के बेटी रहू । अब हमार पत्नी बाडू । नइहर जइबू त ओह लोग के बोझ हो जइबू । हाथी के खरचा बरदास हो जाला लोग से बाकिर बेटी के खरचा ना बरदास होला । दुनिया जहान के बात बा ई । सभे जानेला ।

कमला : हम अपना माई बाबू के बोझा ना बनब कबहूँ ।

रंजन : ना कमला, तहरा दुनियादारी के अनुभव नइखे अबहिन ! बहुत पेचे केहू अपना बेटी केक अपना घरे राखेला । राजा महाराजा भी अपना बेटी के खरचा ना उठा पावस । तहरा कमी कवना बात के बा ? इहे नू कि हम अभी बेरोजगार बानी । कवनो रोजी रोजगार नइखीं करत । ऊहो हो जाई । घबराइला से कुछ ना होला ।

कमला : अम्माजी देखल नइखी चाहत हमरा के ।

रंजन : काहें ?

कमला : ई त ऊहें का नू बताइब ।

रंजन : जरूर कवनो कमी देखत होइहें । तू आपन कमी दूर क ल ।

कमला : का कमी बा हमरा में बताई रउवे ।

रंजन : देख कमला, माई हमार पुराना जबाना के औरत हीय । पुरान दिमाग बा । पुरान सोच समझ बा । तू पढ़ल–लिखल बाडू । नयका जबाना के दिमाग बा । नया सोच समझ बा । मिला जुला के अइसन बेवहार कर कि माई खुश हो जाय । फेर का दिक्कत बा । क दिन के मेहमान बिया ? फेर त तहरे राज रही ।

कमला : उहाँ के कबो खुश ना रहब हमरा से ।

रंजन : काहें ? उहो त आदमी हई । जानवर ना नू हई । हर आदमी

www.bhojpurisahityangan.com

के प्यार दुलार, मीठ बोली, बढ़िया चाल चलन, पसंद पड़ेला । उनुका काहें ना पड़ी ?

कमला : रउवो अपना माई के पछ लेबे लगनी ?

रंजन : ना ना, हम माई के पछ नइखीं लेत । हम अपना माई के जानत बानी । तू अबहीं नइखू जानत । धीरे धीरे जान जइबू । ऊ हमरा के जनम देले बिया । पोसले पलले बिया । हमरे नीने सूतल जागल बिया । पढ़ा–लिखा के सेयान कइले बिया । ओकर बोली भलहीं कुछ रुखर ह । हम जानत बानी ऊ का चाहेले ।

कमला : का चाहेली ?

रंजन : तहरा नइखे बुझात ? एके बतिया काहें बेसन अस फेंटत बाड़ू ?

कमला : जाए दीहीं । फेटी मत । नोकरिया के का उमेद बा ?

रंजन : तू त खुदे पढ़ल–लिखल बाड़ू । देस के हालत देखत बाड़ू । नोकरी अपना हाथ के नइखे । कतना दिन से सभ बहाली बंद बा । छंटनियो खूब होता । कुछ होतो बा त पइसा वाला मुँह माँगा दाम दे के खरीद लेत बाड़न । बिना दाम के काम होत नइखे । पहिलही सभ सेट हो जाता ।

कमला : त रउवो दे दीहीं दाम ।

रंजन : कहवाँ से दे दीहीं ? खेत बधार अधिका बा ना । कुछ पढ़ाई–लिखाई में गइल । कुछ बहिन के बिआह में बाकलम ख़ास भइल । खाए चबावे भर बाँचल बा । इज्जत हुरमत तोपाइल ढकाइल बा ।

कमला : त कवनो रोजी रोजगार करीं ।

रंजन : ओकरो खातिर बड़हन पूँजी पट्टा चाहीं । सगरो बड़का माल खुल गइलन स । बड़का पूँजी पतियन के आगे टुटपुंजिया लोग के खटिया खाड़ हो रहल बा। छोट–मोट दुकानदार लोग के देंन नइखे दियात । खरचा अतना बढ़ गइल बा कि करजा लदाइल बा । कतने लोग खुदकुशी करत बाड़न । दिन दुपहरे दिवालिया होत बाड़न । तहरा ई सभ समुझे के पड़ी अबहीं ।

कमला : तबले अइसहीं थूके सातू सनात रही ?

रंजन : ना हो, तहरा हमरा प भरोसा नइखे ?

कमला : रउआ प ना रही भरोसा त केकरा प रही जी ?

www.bhojpurisahityangan.com

रंजन : त ठीक बा आराम से रह । जवन मिलत बा तवन खा पेन्ह । माई के खुश राख । समय आवत बा । सभ ठीक हो जाई । चल कुछ खाए के द । भूख लागल बा ।

कमला : ठीके बा चलीं । हमार करम त रउए संघे नू लिखाइल बा । जवना बिधी राखब, रहबे करब । शहर बाजार रहित त हमहूँ कवनो काम धंधा खोजीतीं । राउर नोकरिया लाग जाइत त हमरो पढ़ल–लिखल सुफलान हो जाइत । दूनो बेकत कमइती जा । कवनो चीज के खखन ना रहि जाइत ।

रंजन : ठीक बा, सभ पूरा होई । मन में धीरज राख । हमरा माई के बात के दुःख मत मान । कुछ कहतो बिया त सुन के चुपा जा ।

कमला : चुपाइले नू बानी । कब रावा से शिकायत कइनी हा । रोज बपवा भइयवा काटेली । साँझा पराती भजन सुनावेली । मन त करेला कि बहरी निकल के समाज के बेटी बहिन लोग से मिली । ओह लोग से बोलीं बतिआई । पढ़ाई–लिखाई । बाकिर बाहरी निकले दीहें तब नू । बिना निकलले तसहत्तर गो अछरंग लगावत बाड़ी । निकलला प त जाने का का कह दीहें । बाकिर चुपइलो के हद होला । तनी उनुको के समुझा देब । ना त दुरगति सहात नइखे ।

रंजन : कुछो दुरगति ना होई । जे सहेला ओकरे लहेला । लड़ला झगड़ला से केहू बड़ ना हो जाला । पढ़ल–लिखल आदमी के बुधी बेवहार अनपढ़ लेखा ना होखे के चाहीं । चल खाना द ।

कमला : चलीं ।

(दूनो जना जात बा लोग । मंच प अन्हार होता ।)

(क्रमशः शेष आगे के अंक में.....)

***

अपील

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना स्थापना काल से भोजपुरी के बढ़ंती में लागल बा । सभे भोजपुरिया लोग से निहोरा बा जे एकर सदस्य बन के भोजपुरी आंदोलन के बरियार करीं ।

–संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

मजदूरन के जीवन–संघर्ष के खूब देखावल गइल बा हिंदी फिल्मन में

–मनोज भावुक

मजदूर एह दुनिया के हो रहल हर तरह के विकास के नींव के ईंटा होलें । कुछ भी बने, बढ़े, गढ़े के होला त मजदूर पहिला पंगत में खड़ा मिलेलें, बाकिर जब भी कुछमिले, पावे के होला त ओकरा के अंतिम पंगत में ठेल दिहल जाला । कवनो मजदूर के सवख त ना होला बाकिर उ मजबूरिए में ई सब कुछ झेलेला । मजदूरन के कुंडली में शोषण शब्द अइसे टॉका जाला जइसे कि ओकरा ऊपर जिनगी भर राहू के महादशा चलत होखे । ऊ शोषित होत रहेला, काहें कि उ कमजोर होला, मजबूर होला । बाकिर जइसही ओकरे गोला से केहू हिम्मती निकल जाला त ऊ संगठित हो जाला । लकड़िया लेखां जब बहुसंख्यक हो जाला त ओकरा के तूरे वाला के हौंसला टूट जाला । ओह हिम्मती के लोग कई नाम से बोलवेला ओह में प्रचलित उपाधि बा मजदूर नेता ।

हर साल 1 मई के मजदूर दिवस मनावल जाला । अभियो मजदूर आ मजदूर दिवस पर चर्चा चलते बा त आज मजदूरन के लड़ाई पर बनल फिल्मन के चर्चा होई, साथे ओह लड़ाई के नेतृत्व करे वाला मजदूर नेता लोग के भी बात कइल जाई ।

मजदूरन के त्रासदी पर भारत में फिल्मन के शुरुआत से ही फिल्म बन रहल बा । ओह में जवन एगो बड़ फिल्म के रूप में जानल जाला ओकर नाम ह 'नया दौर' ।

नया दौर : दिलीप कुमार आ वैजयंती माला के फिल्म 'नया दौर' 1957 में आइल रहे । ई फिल्म के निर्माता बी.आर. चोपड़ा रहलें । इहे फिल्म रहे जेकरा शूटिंग से पहिले दिलीप कुमार आ मधुबाला के प्रेम संबंध से कबो ना खतम होखे वाला दूरी हो गइल । ई फिल्म के लेके कानूनी विवाद भी भइल आ मधुबाला फिल्म छोड़ देहली । एह फिल्म के

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी दूगो दोस्त के रहे जवन बाद में मजदूर आ मालिक के हो गइल । मजदूर जब दिलीप कुमार के किरदार शंकर के अगुआई में ठनले सन त जीत हासिल करके मनलऽसन । ई फिल्म ओ दशक के दुसरा सबसे अधिक कमाई करे वाला फिल्म भइल आ एकरा के छोट शहर अउरी कस्बा के दर्शक खूब पसंद कइलें ।

मजदूर : दिलीप कुमार आ बी.आर. चोपड़ा फेर साथे आइल लोग फिल्म 'मजदूर' लेके । एह फिल्म के कहानी रहे एगो मिल मालिक के जवन मुनाफा बढ़ावे खातिर मजदूरन के भविष्य खतरा में डाल देत बा। एकरा खिलाफ जब मजदूर नेता यानि दिलीप कुमार मीटिंग में खिलाफत करत बाड़ें त उ खिसिया जात बा अउरी माफी माँगे के कहत बा। मजदूर नेता एगो इंजीनियर के लेके अउरी अपना साथी मजदूर के साथे आपन मिल खड़ा कर देत बाड़ें अउरी देखते–देखत प्रतिष्ठित मिल मालिक बन जात बाड़ें । ओकरा बाद दुनू मालिक लोग में संघर्ष होत बा । इहे फिल्म के कहानी बा बाकिर एहमें बहुत दिलचस्प ट्विस्ट बाटे ।

नमक हराम : बंबई के कपड़ा मिल में मजदूरन के खराब हालत अउरी मिल मालिक के मनमाना के केंद्र में रख के फिल्म बनल बा नमक हराम । राजेश खन्ना अउरी अमिताभ बच्चन के मुख्य भूमिका वाला ई फिल्म हिन्दी फिल्म जगत के काफी सफल फिल्म मानल जाले । ऋषिकेश मुखर्जी आनंद के बाद एह फिल्म में दुनू जाना के साथे कास्ट कइले रहलें । एह फिल्म के कहानी रहे एगो युवक के जवन यूनियन लीडर से बदला लेबे खातिर मिल में जात बा आ मजदूर फेर यूनियन लीडर बन जात बा । जब उ मजदूरन के हालत देखत बा त बहुत प्रभावित होत बा अउरी आपन उद्देश्य बदल देत बा । फिल्म के कहानी एही के इर्द–गिर्द गढ़ल बा ।

कुली : अमिताभ बच्चन के फिल्म जवन काफी प्रसिद्ध भी भइल अउरी एकरा एगो फाइट सीन में उभरला से बचलें । फिल्म कुली बिगबी के करियर के बड़ फिल्म मानल जाला । एह फिल्म के कहानी कूलियन के दुर्दशा अउरी ओकनी के हक के लड़ाई लड़े वाला एगो युवा के रहे जवन राजनीति पसंद नइखे करत बाकिर ओकरा राजनीतिक दांव पेंच में फंस जाए के पड़त बा । ई फिल्म त अधिकांश लोग देखले होई बाकिर एकरा के फेर से भी देखल जा सकेला ।

लाडला : अनिल कपूर अउरी श्रीदेवी के फिल्म लाडला भी

www.bhojpurisahityangan.com

काफी सफल फिल्म मानल जाला । ई फिल्म अक्सर टीबी पर आवेला । मिल के मालिकाना हक जब युवती शीतल के हाथ में आवत बा त फैक्ट्री के यूनियन लीडर राजू के उ होश ठिकाने लगावे के कोशिश करत बाड़ी । जब उनके नाकामी हाथ लागत बा त उ राजू से बियाह कर लेत बाड़ी अउरी घर जमाई बना के ओकरा के साजे चाहत बाड़ी । बाकिर घटनाक्रम अइसन बदलत बा कि खुदे सजा जात बाड़ी । ई फिल्म भी देखे वाला बा ।

केजीएफ–1 : हाल में रिलीज भइल केजीएफ के पहिला फिल्म चैप्टर 1 अपना कहानी अउरी फिल्मांकन के हिसाब से दुसरका फिल्म के कई गुना बेहतर फिल्म रहे । ओ फिल्म में कहानी रहे, मजदूरन के त्रासदी के सटीक चित्रांकन रहे, फेर ओकनी के आशा बनके आवे वाला एगो मसीहा के उठान के कहानी रहे । ओ फिल्म में बेवजह के स्वैग आ भर भर के स्लो मो शॉट के एतना तड़का ना रहे जेतना दुसरका में बा । उ फिल्म भी मजदूरन के व्यथा कथा के विस्तार से देखावे वाला साबित भइल ।

ई त भइल फिल्मन के बात, आई कुछ असल जिंदगी के नामचीन मजदूर नेता लोग के बारे में जानल जाए : दत्ता सामंत महाराष्ट्र के बड़ मजदूर नेता रहलें । उनके कद अइसन रहे कि जब मिल मालिक लोग उनका घरे जाके मजदूरन के मॉग पर आपन सहमति के आवे लोग ।

दत्तोपंत ठेंगड़ी आरएसएस के सदस्य रहलें अउरी साथे भारतीय मजदूर संघ के भी संस्थापक रहलें । उ मजदूरन के हक के जब बात आवे त अपनो पार्टी के सरकार के विरुद्ध खड़ा हो जास ।

जार्ज फर्नांडीस एगो बड़ मजदूर नेता रहलें । उनके समर्थन के अंदाजा एही बात से लगा सकीलें कि उनका एक आह्वान पर 1974 में 15 लाख रेल कर्मचारी हड़ताल पर चल गइल रहलें ।

बिड़ला के हिंडाल्को के मजदूर नेता रामदेव सिंह भी अइसने नेता रहलें जेकरा एक आवाज पर 1966 में हिंडाल्को के चिमनी के धुंआ बंद हो गइल, जे 14 साल कंपनी से बाहर रहके मजदूरन के हक खातिर लड़लें आ जीतलें अउर जे जार्ज फर्नांडीज लेखा आजीवन समाजवादी बनल रहलें । हाल ही में 14 अप्रैल 2022 के रामदेव बाबू के निधन हो गइल ।

***

www.bhojpurisahityangan.com

एगो असाधारण प्रतिभा के पूत

–डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

बात आज से बहुत पहिले के ह । एगो लड़िका रहे । स्कूल में ओकरा संगे पढ़े वाला लड़िकन ओकरा से बहुते प्रभावित रहलें । ऊ लड़िका बहुत मेधावी आ असाधारण प्रतिभा के रहे । ऊ नीमन वक्ता रहे । ऊ आपन संघतिया लोगन के खूब नीमन से ज्ञान के बात बतावे । एक दिन ऊ अपना वर्ग में अपना संगे पढ़ेवाला लड़िकन से कवनो प्रसंग पर बतकही करत रहे । सभे संगी लड़िका लोग खूब ध्यान से सुनत रहे । बात सुने में सभे एतना डूब गइल रहे कि कब मास्टर साहेब आके पढ़ावे लगनीं ओकनी के ध्याने में ना आइल । कुछ देर बाद मास्टर साहेब के ध्यान ओह लड़िकन का ओर गइल जे कुछ आउरी सुने में मगन रहे ।

मास्टर साहेब जवन पढ़ावत रहलें ओकरा बारे में लड़िकन से पूछ बइठलें । केहू ना बता पावल कि मास्टर साहेब का पढ़ावत रहली

www.bhojpurisahityangan.com

ह । जवन लड़िका के बतकही में कुल्हि लड़िकन मगन रहे, ओकरा से जब मास्टर साहेब उहे सवाल कइले त ऊ पूरा–पूरा सब ठीक–ठीक बता दिहलस । मास्टर साहेब ना जबाब देवे वाला लड़िकन के बेंच पर खड़ा होखे के सजाय दिहलें । ओह लड़िकन के संगे उहो लड़िका बेंच पर खड़ा भ गइल । मास्टर साहेब ओकर नॉव लेके कहनी कि तू काहे खड़ा होत बाड़, तू त सब सही–सही बतवल ह । लड़िका कहलस कि ऊ लड़िकन के कवनो दोष नइखे । दोष हमार बा, काहे कि हमहीं ओह लड़िकन के अपना बात में ओझरइले रहनी ह । मास्टर साहेब वोह लड़िका के ईमानदारी आ सत्यवादिता से बहुत प्रसन्न भइनी ।

ऊ लड़िका के नॉव रहे नरेन्द्र नाथ दत्त । आगे चल के ऊ महान विचारक, वेदांत के जानकार स्वामी विवेकानन्द नॉव से दुनिया में आपन नॉव के झंडा फहरवलें । इनकर बाबूजी विश्वनाथ दत्त जी कलकता के एगो नामी वकील रहनी आ माई भुवनेश्वरी देवी धार्मिक प्रवृति के एगो कुशल गृहिणी रहीं । इनकर जन्म 12 जनवरी, 1863 के कलकत्ता में भइल रहे । इहाँ के गुरू रहनीं स्वामी रामकृष्ण परम हंस ।

11 सितम्बर, 1893 के अमेरिका के शिकागो शहर में विश्व धर्म सभा में भारत के इहाँ का प्रतिनिधित्व कइले रहीं । जब धर्म संसद में इनका बोले के अवसर मिलल आ ई आपन संबोधन 'अमेरिका के बहनो और भाइयो से शुरू कइलें त सभा में तालियन के गड़गड़ाहट गूंज उठल । इनकर ई वाक्य युवा वर्ग खातिर प्रेरणा के सूत्र साबित भइल– 'उठऽ, जागऽ आ तब तक ना रुकऽ, जबतक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाए ।'

***

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, बी–12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, जगदेव पथ, पटना से प्रकाशित, जे॰ एम॰ कम्प्यूटर,पटना में अक्षर-संयोजित आ अल्का प्रकाशन, पटना से मुद्रित । सम्पादक: *महामाया प्रसाद 'विनोद'*